CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2019 with Solution PDF-Set 2/1/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2, 4, 6, 7, 8, 9, 11, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. अगर कोई ज़िंदगी में सच न बोलने, सच स्वीकार न करने और सच का साथ न देने की कोई विवशता बताकर अपने हर कार्य, विचार और मकसद को सही साबित करने के लिए छल-छद्म और झूठ का सहारा ले और फिर भी सीना तानकर ख़ुद को सच्चाई का रहनुमा साबित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो, तो इससे किसका भला होगा ? वह यही करते रहे । फिर ढलती उम्र में अचानक एक दिन उनको अपनी ज़िंदगी में पीछे मुड़कर झाँकने का विचार आया । जब जागो, तभी सबेरा । अब ये वाकई ईमानदार और समाज के रहनुमा बनकर समाजसेवा कर सकते हैं । जीवन का सबसे बड़ा सच अपने कार्य और कर्तव्य को ईमानदारी से समझना और समाज की बेहतरी के लिए सोचना है । वे सोचने लगे, ढलती उम्र में अब क्यों उनको ज़िंदगी के इस कटु सच को स्वीकार करने के प्रति उत्सुकता बढ़ रही है ?

कुछ दार्शनिकों का कहना है कि आत्म-शक्ति से कमज़ोर, परम्परावादी और निहित स्वार्थ को महत्त्व देना मानवीय सरोकारों से ख़ुद को दूर करने जैसा है । आमतौर पर ज़िंदगी के सच से रूबरू होने और उसे स्वीकार करने का साहस हर किसी के पास नहीं होता । यह चेतना का उदारवादी लक्षण और भाव है, जो कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखता है । अपने प्रति संवेदनहीन बने रहना मानव जीवन का सबसे बड़ा सच है । समाज को अपनी औकात दिखाने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने में न जाने कितने छल-छद्मों का सहारा हम लेते हैं । यह ज़िंदगी का सबसे बड़ा यथार्थ है, जो हम स्वयं से और समाज से छिपाने के लिए कृत्रिमता का सहारा लेते रहते हैं ।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [12 अंक]

1(क). 'सीना तानना' मुहावरे का क्या अर्थ है ? अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ शब्दों के सामान्य अर्थ से अलग, प्रसंग के अनुसार समझा जाता है।
- वाक्य में मुहावरे का प्रयोग उसके सही अर्थ को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अर्थ पहचानें 'सीना तानना' का अर्थ है गर्व अथवा अकड़ के साथ खड़ा होना या व्यवहार करना। गद्यांश में यह अपने को सच्चाई का रहनुमा बताने के दंभ को व्यक्त करता है।

चरण 2: वाक्य में प्रयोग करें देश के लिए पदक जीतकर लौटा खिलाड़ी सीना तानकर मंच पर खड़ा हुआ। यहाँ खिलाड़ी का गर्व और आत्मविश्वास मुहावरे के अर्थ को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'सीना तानना' अर्थात गर्व या अकड़ दिखाना। वाक्य: वीर सैनिक सीना तानकर देश की रक्षा करते हैं।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का अर्थ लिखने के बाद ऐसा वाक्य बनाएँ जिसमें गर्व या अकड़ का भाव स्पष्ट हो।

1(ख). 'ढलती उम्र' से क्या तात्पर्य है ? इसका विपरीतार्थक क्या होगा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पद का अर्थ उसके प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विपरीतार्थक पद में मूल पद से उलटी अवस्था व्यक्त होनी चाहिए।

चरण 1: पद का अर्थ समझें 'ढलती उम्र' से तात्पर्य जीवन की उस अवस्था से है जिसमें यौवन बीत रहा हो और व्यक्ति वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहा हो। गद्यांश में इसी अवस्था में व्यक्ति अपने बीते जीवन पर विचार करता है।

चरण 2: विपरीत अवस्था पहचानें इसका विपरीतार्थक 'चढ़ती उम्र' है। यह बढ़ती आयु की युवावस्था की ओर अग्रसर अवस्था को व्यक्त करता है; इसके विपरीत ढलती उम्र में व्यक्ति बुढ़ापे की ओर जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'ढलती उम्र' का अर्थ वृद्धावस्था की ओर बढ़ती आयु है। इसका विपरीतार्थक 'चढ़ती उम्र' है।

त्वरित सुझाव: ढलना और चढ़ना की विपरीत दिशा याद रखें तथा उत्तर में दोनों की आयु संबंधी अवस्था लिखें।

1(ग). कोई व्यक्ति प्राय: विवशता किस उद्देश्य से बताता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में व्यक्ति के उद्देश्य का उत्तर उसके बताए कारण और वास्तविक आचरण के संबंध से मिलता है।
- किसी दावे को उचित ठहराने की कोशिश और सच्चे कर्तव्यपालन के बीच अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश में बताए व्यवहार को पहचानें गद्यांश का व्यक्ति सच न बोलने, सच स्वीकार न करने और सच का साथ न देने की विवशता बताता है। वह अपने आचरण की कमी स्वीकार करने के बजाय उसके लिए परिस्थितियों का सहारा लेता है। उसके इस कथन को वास्तविक ईमानदारी मानना उचित नहीं होगा।

चरण 2: विवशता के पीछे का उद्देश्य स्पष्ट करें वह अपने हर कार्य, विचार और मकसद को सही साबित करना चाहता है। इसी उद्देश्य से छल-छद्म और झूठ का सहारा लेकर भी अपने को सच्चाई का रहनुमा दिखाता है। विवशता बताना उसके लिए असत्य आचरण का औचित्य सिद्ध करने और अपनी छवि बचाने का साधन बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कोई व्यक्ति प्राय: अपने अनुचित कार्यों, विचारों और उद्देश्यों को सही ठहराने के लिए विवशता बताता है। वह सत्य से विमुख आचरण को उचित साबित करके स्वयं को सच्चा दिखाना चाहता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में उद्देश्य पूछा गया है; उत्तर में केवल विवशता की सूची देने के बजाय सही साबित करने की मंशा लिखें।

1(घ). किस प्रवृत्ति और आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में कथन का मूल्यांकन व्यक्ति की कथनी और करनी के आधार पर किया जाता है।
- समाज के भले के लिए सत्यनिष्ठ आचरण आवश्यक है; केवल सच्चाई का दावा पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: हानिकारक प्रवृत्ति स्पष्ट करें अपने गलत कार्यों, विचारों और उद्देश्यों को हर स्थिति में सही साबित करने की प्रवृत्ति हानिकारक है। ऐसा व्यक्ति आत्मपरीक्षण के बजाय विवशता का बहाना बनाता है। वह न सच बोलता है, न उसे स्वीकार करता है और न उसका साथ देता है।

चरण 2: उससे जुड़ा आचरण बताएँ इस प्रवृत्ति से वह छल-छद्म और झूठ का सहारा लेता है, फिर भी गर्व से अपने को सत्य का रहनुमा बताता है। सच्चाई का यह दिखावा वास्तविक ईमानदारी और समाजसेवा का स्थान नहीं ले सकता। इसी विरोधाभास पर लेखक प्रश्न उठाता है कि ऐसे व्यवहार से भला किसका होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सत्य से बचने, अपने अनुचित कर्मों को उचित ठहराने और छल-झूठ का सहारा लेकर भी स्वयं को सच्चाई का रहनुमा दिखाने की प्रवृत्ति तथा आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता।

त्वरित सुझाव: प्रवृत्ति के साथ उसके व्यवहार के उदाहरण भी दें: असत्य का सहारा और सत्यवादी होने का दिखावा।

1(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'जब जागो, तभी सबेरा' । इस कहावत का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहावत का भावार्थ उसके शब्दार्थ से आगे जाकर जीवन से जुड़ी सीख को स्पष्ट करता है।
- प्रसंग पूछे जाने पर गद्यांश की उस घटना या स्थिति का उल्लेख करना चाहिए जहाँ कथन प्रयुक्त हुआ है।

चरण 1: कहावत का आशय समझाएँ 'जब जागो, तभी सबेरा' का आशय है कि अपनी भूल का बोध होते ही सुधार की शुरुआत कर देनी चाहिए। सच्चाई और अच्छे कर्मों की ओर लौटने के लिए कोई भी समय देर का नहीं है। यहाँ जागना नींद से उठना नहीं, बल्कि अपनी गलतियों के प्रति सचेत होना है।

चरण 2: गद्यांश का संदर्भ बताएँ गद्यांश में व्यक्ति ने जीवन में छल, झूठ और दिखावे का सहारा लिया, पर ढलती उम्र में उसे पीछे मुड़कर अपने जीवन को देखने का विचार आया। इसी आत्मपरीक्षण के संदर्भ में कहावत प्रयुक्त हुई है। अब भी वह ईमानदार बनकर अपने कर्तव्य समझ सकता है और समाज की बेहतरी के लिए कार्य कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कहावत का अर्थ है कि भूल का एहसास होने पर उसी समय सुधार आरंभ करना उचित है। इसका प्रयोग ढलती उम्र में व्यक्ति के आत्मबोध और ईमानदार समाजसेवा की नई शुरुआत के संदर्भ में हुआ है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखें: पहले भूल सुधारने की सीख, फिर ढलती उम्र में आत्मपरीक्षण वाला प्रसंग।

1(च). चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में उदार चेतना का संबंध सत्य के प्रति साहसपूर्ण और खुले दृष्टिकोण से है।
- किसी विशेषण का आशय उसी वाक्य के निकट दिए गए कथन से स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: उदारवादी लक्षण की पहचान करें जीवन के सच से रूबरू होना और उसे स्वीकार करने का साहस चेतना का उदारवादी लक्षण है। व्यक्ति को अपने वास्तविक आचरण का सामना करना होता है। अपने बारे में बनाई हुई अच्छी छवि से अलग सच्चाई को मानना ही यहाँ उदारता का संकेत है।

चरण 2: इसकी दुर्लभता समझाएँ लेखक कहता है कि सत्य का सामना करने और उसे स्वीकारने का साहस हर किसी में नहीं होता। यह भाव कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखाई देता है। लोग अक्सर छल-छद्म, मुखौटे और कृत्रिमता से अपने यथार्थ को छिपाते हैं; इसलिए ईमानदारी से सत्य स्वीकार करने का भाव दुर्लभ कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के सत्य का सामना करने और उसे साहसपूर्वक स्वीकार करने की क्षमता चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण है। यह हर व्यक्ति में और हर समय दिखाई नहीं देती।

त्वरित सुझाव: उदारवादी का सामान्य राजनीतिक अर्थ न लिखें; यहाँ उसे जीवन के सत्य को स्वीकार करने के साहस से जोड़ें।

1(छ). जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय विचार व्यक्ति की वास्तविकता और उसकी दिखावटी छवि के बीच अंतर स्पष्ट करता है।
- किसे और क्यों पूछे जाने पर कथ्य की पहचान के साथ उसका कारण भी लिखना आवश्यक है।

चरण 1: सबसे बड़े यथार्थ की पहचान करें गद्यांश में समाज के सामने अपनी हैसियत या छवि दिखाने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने की प्रवृत्ति को जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ कहा गया है। मनुष्य इस दिखावटी रूप को सच साबित करने के लिए अनेक प्रकार के छल-छद्मों का सहारा लेता है।

चरण 2: इसके पीछे का कारण स्पष्ट करें मनुष्य अपनी वास्तविकता को स्वयं से और समाज से छिपाना चाहता है। अपने प्रति संवेदनहीन रहकर वह अपनी कमियों को स्वीकार करने के बजाय कृत्रिमता अपनाता है। इसीलिए उसका दिखावा और असली आचरण अलग हो

जाते हैं। लेखक इस प्रचलित व्यवहार को यथार्थ कहता है, उसकी प्रशंसा नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष मुखौटे को वास्तविक रूप देने के लिए छल-छद्म और कृत्रिमता अपनाना जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ कहा गया है, क्योंकि मनुष्य अपनी असलियत को स्वयं से तथा समाज से छिपाना चाहता है।

त्वरित सुझाव: यथार्थ की पहचान के बाद क्योंकि लगाकर वास्तविकता छिपाने और कृत्रिमता अपनाने का कारण स्पष्ट करें।

---

2. प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता
ज़रूर दिखाई देती होंगी नसीहतें
नुकीले पत्थरों-सी
दुनिया भर के करोड़ों पिताओं की लंबी कतार में
पता नहीं कौन-सा नंबर है मेरा
पर बच्चों के फूलों वाले बग़ीचे की दुनिया में
तुम अव्वल हो पहली क़तार में मेरे लिए
मुझे माफ़ करना मैं अपनी मूर्खता और प्रेम में समझता था
मेरी छाया के तले ही सुरक्षित रंग-बिरंगी दुनिया होगी तुम्हारी
अब जब तुम सचमुच की दुनिया में निकल गई हो
मैं ख़ुश हूँ सोचकर
कि मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई ।

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [4 अंक]

2(क). टिप्पणी कीजिए : "प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पिता का प्रेम उसकी सुरक्षा की चिंता और नसीहतों के माध्यम से प्रकट होता है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ समझें पिता का स्नेह प्राय: खुलकर दिखाई नहीं देता। बच्चों को उसके व्यवहार में रोक-टोक और कठोर सलाह अधिक दिखाई देती है, पर उनके पीछे बच्चों की भलाई और सुरक्षा की भावना छिपी होती है।

चरण 2: नसीहत और प्रेम का संबंध स्पष्ट करें कवि की नसीहतों को नुकीले पत्थरों जैसा कहा गया है, क्योंकि वे बच्चों को चुभ सकती हैं। फिर भी पिता की यह कठोरता स्नेह का ही रूप है। वह संतान के लिए सुरक्षित और रंग-बिरंगी दुनिया चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता का प्रेम प्रत्यक्ष प्रदर्शन के बजाय उसकी चिंता, सुरक्षा की भावना और कभी कठोर लगने वाली नसीहतों में छिपा रहता है।

त्वरित सुझाव: पिता की कठोर नसीहतों के पीछे छिपे कल्याण और सुरक्षा के भाव को उत्तर में जोड़ें।

2(ख). पिता किस बात के लिए क्षमा माँग रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिता अपनी संतान की स्वतंत्र पहचान स्वीकार करते हुए पहले की सीमित धारणा पर क्षमा चाहता है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: क्षमा माँगने का कारण पहचानें पिता पहले समझता था कि उसकी छाया में ही संतान की दुनिया सुरक्षित और रंग-बिरंगी रह सकती है। वह अपने प्रेम में यह मान बैठा था कि उसके संरक्षण के बाहर संतान का जीवन उतना सुरक्षित नहीं होगा।

चरण 2: बदली हुई समझ स्पष्ट करें अब संतान वास्तविक दुनिया में निकल गई है और अपनी स्वतंत्र पहचान बना रही है। पिता इससे खुश है। उसे समझ आता है कि उसका पहले का विश्वास प्रेम से उपजा होने पर भी संतान की क्षमता और स्वतंत्रता को सीमित करता था।

चरण 3: निष्कर्ष पिता इस धारणा के लिए क्षमा माँग रहा है कि केवल उसकी छाया में ही संतान की दुनिया सुरक्षित रह सकती है।

त्वरित सुझाव: क्षमा का कारण पिता का प्रेम होना भर नहीं, अपने संरक्षण को एकमात्र सुरक्षा मानना है।

2(ग). 'नसीहत' किसे कहते हैं ? उन्हें पत्थरों-सी क्यों कहा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नसीहत का अर्थ हित के लिए दी गई सीख या सलाह है; उपमा उसके चुभने वाले प्रभाव को स्पष्ट करती है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: नसीहत का अर्थ लिखें नसीहत वह सीख, सलाह या उपदेश है जो किसी को उचित आचरण और उसके हित का रास्ता बताने के लिए दिया जाता है। यहाँ पिता अपनी संतान को जीवन में सुरक्षित रहने की सलाह देता है।

चरण 2: पत्थरों की उपमा समझें नुकीले पत्थर चुभते हैं; उसी प्रकार पिता की बार-बार दी गई सीख बच्चों को कठोर और अप्रिय लग सकती है। इसीलिए नसीहतों को नुकीले पत्थरों-सी कहा गया है। यह उपमा सलाह के पीछे प्रेम के अभाव को नहीं, उसके चुभते अनुभव को बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष नसीहत का अर्थ सीख या सलाह है। पिता की नसीहतें बच्चों को कठोर और चुभने वाली लगती हैं, इसलिए उन्हें नुकीले पत्थरों-सी कहा गया है।

त्वरित सुझाव: पहले नसीहत का सीधा अर्थ दें, फिर नुकीले पत्थरों और सलाह की समान चुभन स्पष्ट करें।

2(घ). आशय समझाइए : "मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई ।" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा का अहाता पिता की समझ और अनुभव की सीमा है; उससे परे जाना संतान के स्वतंत्र विकास का संकेत है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: अहाते का सांकेतिक अर्थ समझें अहाता एक सीमाबद्ध क्षेत्र होता है। यहाँ पिता की भाषा का अहाता उसकी सोच, अनुभव और अभिव्यक्ति की सीमाओं का प्रतीक है। संतान की परछाई का उस सीमा से आगे होना उसके जीवन के व्यापक होने को दिखाता है।

चरण 2: पिता की प्रसन्नता का आशय लिखें संतान अब पिता के संरक्षण और उसकी दृष्टि तक सीमित नहीं है। वह वास्तविक दुनिया

में अपनी राह और पहचान बना रही है। पिता उसके इस स्वतंत्र विकास को देखकर प्रसन्न है और पहले उसे अपनी छाया तक सीमित समझने की भूल स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि संतान पिता की सोच और अनुभव की सीमाओं से आगे बढ़कर अपनी स्वतंत्र पहचान बना रही है; पिता इस विकास से प्रसन्न है।

त्वरित सुझाव: भाषा के अहाते को वास्तविक घर न मानें; इसे पिता की सोच और अनुभव की सीमा से जोड़ें।

अथवा

2. जहाँ विपुल विश्व की माया,
विनाशशील नर्तन में
क्षण-क्षण बदल रही है अपनी काया
पल-पल जी रही है नवीना बनकर
वायु के चरण भी काँप रहे हैं,
विस्तृत मरु की नीरवता-सी,
लहरियाँ लोट रही हैं धरा पर
घायल विक्षुब्ध सर्पिणियों-सी, ऐसे में
तुम्हारे लिए ऐसी जगह मैं कहाँ से लाऊँ
जहाँ तुम खेल सको निर्भय, हर्षित होकर । [4 अंक]

2(क). कविता में संसार को कैसा बताया गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में संसार को समझने के लिए उसके परिवर्तन और विनाश के संकेतों को साथ पढ़ना चाहिए।
- विश्व की माया बाहरी रूपों का संकेत है, जो स्थायी नहीं रहते।

चरण 1: परिवर्तन का संकेत कवि कहता है कि संसार क्षण-क्षण अपनी काया बदलता है और पल-पल नया रूप धारण करता है। इससे उसके परिवर्तनशील और अस्थिर स्वरूप का बोध होता है।

चरण 2: असुरक्षा का वातावरण विनाशशील नर्तन, काँपती वायु और घायल सर्पिणियों जैसी लहरियों के चित्र संसार की व्याकुलता बताते हैं। इसलिए यहाँ परिवर्तन के साथ भय और अशांति भी व्याप्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संसार नश्वर, निरंतर परिवर्तनशील और अशांत बताया गया है; उसके बाहरी रूप हर क्षण बदलते रहते हैं।

त्वरित सुझाव: संसार का स्वरूप बताते समय क्षण-क्षण बदलने और विनाशशील नर्तन, दोनों संकेतों को जोड़ें।

2(ख). क्षण-प्रतिक्षण किसे नवीनता प्राप्त हो रही है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में किसे पूछा गया है, इसलिए उत्तर में परिवर्तन का विषय स्पष्ट करना आवश्यक है।
- कविता में अपनी काया बदलने और नवीना बनने का संबंध विश्व की माया से है।

चरण 1: संबंधित पंक्तियाँ पहचानें विश्व की माया के बाद कवि कहता है कि वह क्षण-क्षण अपनी काया बदल रही है और पल-पल नवीना बनकर जी रही है। इन दोनों कथनों का विषय एक ही है।

चरण 2: नवीनता का अर्थ संसार के दृश्य रूप लगातार बदलते रहते हैं। इसी रूपांतरण के कारण वह हर पल नया प्रतीत होता है। यहाँ नवीनता किसी अकेले बच्चे या कवि को मिलने की बात नहीं कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष क्षण-प्रतिक्षण विपुल विश्व की माया अर्थात संसार के बदलते रूप को नवीनता प्राप्त हो रही है।

त्वरित सुझाव: नवीना बनने वाली सत्ता पहचानने के लिए पिछली पंक्ति के विश्व की माया पद से उसका संबंध जोड़ें।

2(ग). 'वायु के चरण भी काँप रहे हैं' से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रकृति को मानवीय क्रिया देने से वातावरण की भावदशा प्रकट होती है।
- वायु के चरण काँपना भय और अस्थिरता का बिंब है।

चरण 1: काँपने का अर्थ चरण काँपना भय, व्याकुलता और असंतुलन की स्थिति बताता है। कवि वायु में भी यही स्थिति देखकर पूरे संसार में फैली असुरक्षा व्यक्त करता है।

चरण 2: संदर्भ से आशय स्पष्ट करें विनाशशील परिवर्तन और घायल सर्पिणियों जैसी लहरियों के बीच वायु भी निश्चिंत नहीं है। उसके काँपते चरण इस वातावरण के भयावह और अशांत होने को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि संसार में भय और अशांति इतनी है कि स्वतंत्र विचरण करने वाली वायु भी भयभीत तथा विचलित प्रतीत होती है।

त्वरित सुझाव: वायु के काँपने को मौसम की सूचना न मानें; इसे पूरे वातावरण के भय और अस्थिरता से जोड़ें।

2(घ). कवि कैसा स्थान खोज रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंतिम पंक्तियों में कवि की इच्छा सीधे व्यक्त हुई है।
- सुरक्षित स्थान की खोज का संबंध निर्भय और आनंदपूर्ण खेल से है।

चरण 1: स्थान की अपेक्षित विशेषता कवि ऐसी जगह चाहता है जहाँ संबोधित व्यक्ति बिना डर के, हर्षित होकर खेल सके। इसलिए उस जगह में सुरक्षा, शांति और प्रसन्नता होनी चाहिए।

चरण 2: प्रश्नवाचक कथन का भाव चारों ओर विनाश, परिवर्तन और भय देखकर कवि पूछता है कि ऐसी जगह कहाँ से लाए। इस प्रश्न में सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने की चिंता और उसकी कठिनाई व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ऐसा सुरक्षित, शांत और आनंदपूर्ण स्थान खोज रहा है जहाँ उसका प्रिय निर्भय होकर हर्ष के साथ खेल सके।

त्वरित सुझाव: स्थान के तीन गुण सीधे अंतिम पंक्ति से लें: सुरक्षा, निर्भयता और खेलते समय प्रसन्नता।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

हिंदी है अपनी पहचान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विचार को क्रमबद्ध और संबद्ध वाक्यों में विकसित किया जाता है। यहाँ हिंदी का सांस्कृतिक, सामाजिक और व्यावहारिक महत्त्व केंद्रीय विचार है।
- भाषा के प्रति आत्मीयता व्यक्त करते समय अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान बनाए रखना चाहिए। प्रभावपूर्ण अनुच्छेद में भूमिका, विचार-विस्तार और सार्थक समापन एक ही प्रवाह में आते हैं।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ आरंभ में भाषा और पहचान का संबंध स्पष्ट करें। फिर हिंदी के माध्यम से मिलने वाले संस्कार, साहित्य तथा व्यापक संपर्क का उल्लेख करें। अंत में दैनिक व्यवहार, अध्ययन और डिजिटल माध्यमों में हिंदी के उपयोग का संकल्प व्यक्त करें। इस विषय को केवल नारे तक सीमित न रखें; परिवार, साहित्य और जनसंपर्क जैसे ठोस उदाहरणों से विचार स्पष्ट करें।

चरण 2: पूरा अनुच्छेद लिखें **हिंदी है अपनी पहचान**

भाषा केवल विचार व्यक्त करने का साधन नहीं, बल्कि हमारे अनुभवों, संस्कारों और सांस्कृतिक स्मृतियों का घर भी है। हिंदी हमारे जीवन की ऐसी ही आत्मीय भाषा है, जिसमें हम अपने सुख-दुख बाँटते हैं और अनेक लोगों से सहज संबंध बनाते हैं। बचपन की कहानियाँ, लोकगीत, कहावतें और पारिवारिक बातचीत हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। हिंदी का समृद्ध साहित्य भी हमारी पहचान को गहराई देता है। कबीर की निर्भीक वाणी, प्रेमचंद की सामाजिक संवेदना और आधुनिक साहित्यकारों की रचनाएँ हमें मनुष्य तथा समाज को समझने की दृष्टि देती हैं। हिंदी देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संपर्क का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा, पत्रकारिता, सिनेमा और डिजिटल संचार में इसका व्यापक उपयोग इसकी जीवंतता का प्रमाण है। अपनी भाषा का सम्मान करने का अर्थ दूसरी भाषाओं को छोटा समझना नहीं है। भारत की प्रत्येक भाषा हमारी साझा सांस्कृतिक संपदा को समृद्ध करती है। हमें अन्य भाषाएँ सीखते हुए हिंदी में बोलने, पढ़ने और लिखने का आत्मविश्वास भी बनाए रखना चाहिए। इसके लिए अच्छी हिंदी पुस्तकें पढ़ना, स्पष्ट भाषा में संवाद करना और तकनीक पर हिंदी का सार्थक उपयोग करना आवश्यक है। जब हिंदी हमारे ज्ञान, व्यवहार और सृजन की सक्रिय भाषा बनेगी, तभी उसके प्रति हमारा प्रेम वास्तविक होगा। अपनी जड़ों से जुड़े रहकर आगे बढ़ने का यही भाव हिंदी को हमारी पहचान बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस अनुच्छेद में हिंदी को सांस्कृतिक आत्मीयता और व्यापक संपर्क की भाषा बताते हुए उसके सम्मान तथा सक्रिय प्रयोग का संदेश दिया गया है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में भाषा से आत्मीयता का एक उदाहरण, साहित्य का एक संदर्भ और हिंदी के प्रयोग का एक व्यावहारिक उपाय जोड़ें; अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान बनाए रखें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तित्व-केंद्रित अनुच्छेद में व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय, प्रमुख योगदान और उसकी प्रासंगिकता को एक केंद्रीय विचार से जोड़ना आवश्यक है।
- मैथिलीशरण गुप्त पर लिखते समय खड़ी बोली की काव्य-प्रतिष्ठा, राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना और प्रमुख कृतियों का संतुलित उल्लेख करें।

चरण 1: तथ्य और विचार व्यवस्थित करें पहले गुप्त जी का साहित्यिक परिचय दें। इसके बाद खड़ी बोली के विकास और राष्ट्रीय जागरण में उनकी भूमिका समझाएँ। उदाहरण के रूप में 'भारत-भारती', 'साकेत' तथा 'यशोधरा' का उल्लेख किया जा सकता है। अंत में उनकी कविता के मानवीय आदर्शों को वर्तमान जीवन से जोड़ें। अनुच्छेद को केवल रचनाओं की सूची न बनने दें; प्रत्येक उदाहरण उनके

योगदान को स्पष्ट करे।

चरण 2: पूरा अनुच्छेद लिखें **राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त**

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के ऐसे महत्त्वपूर्ण कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता से राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया और समाज को आत्मचिंतन की प्रेरणा दी। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव में हुआ था। उन्होंने खड़ी बोली को काव्य की समर्थ भाषा बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा ने कविता को व्यापक पाठक-समुदाय तक पहुँचाया। उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारत-भारती' में भारत के गौरवशाली अतीत, तत्कालीन दशा और भविष्य की संभावनाओं पर विचार किया गया है। इस रचना ने पराधीन देश में स्वाभिमान और जागरण की भावना को बल दिया। गुप्त जी की राष्ट्रीयता केवल अतीत की प्रशंसा तक सीमित नहीं थी; उसमें कर्तव्य, सुधार और कर्मशीलता का संदेश भी था। 'साकेत' में उन्होंने रामकथा के माध्यम से त्याग, मर्यादा और पारिवारिक संबंधों को चित्रित किया तथा उर्मिला के व्यक्तित्व को विशेष महत्त्व दिया। 'यशोधरा' में उपेक्षित नारी के मन, उसके आत्मसम्मान और उसकी पीड़ा को संवेदनापूर्वक अभिव्यक्त किया। इससे उनकी काव्य-दृष्टि की मानवीय व्यापकता सामने आती है। उनकी रचनाएँ हमें बताती हैं कि देशप्रेम का सच्चा अर्थ समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाना और मनुष्य की गरिमा का आदर करना है। राष्ट्रीय भावना, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों के इसी समन्वय के कारण गुप्त जी का साहित्य आज भी प्रेरणादायक है। उनका काव्य हमें अपने इतिहास से शक्ति लेकर अधिक न्यायपूर्ण और संवेदनशील भविष्य बनाने का संदेश देता है।

चरण 3: निष्कर्ष गुप्त जी का महत्त्व राष्ट्रीय जागरण, खड़ी बोली के काव्य-विकास और उपेक्षित पात्रों की मानवीय प्रतिष्ठा में निहित है। प्रस्तुत अनुच्छेद इन पक्षों को उनकी प्रमुख कृतियों से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: गुप्त जी पर लिखते समय 'भारत-भारती' को राष्ट्रीय चेतना, 'साकेत' को उर्मिला और 'यशोधरा' को नारी-संवेदना से जोड़ें; अप्रमाणित उद्धरण जोड़ने से बचें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

खेल और स्वास्थ्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध विस्तार किया जाता है। 'खेल और स्वास्थ्य' विषय में शारीरिक सक्रियता, मानसिक प्रसन्नता और संतुलित दिनचर्या के संबंध को स्पष्ट करना आवश्यक है।
- उपयुक्त शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में भूमिका, मुख्य तर्क और निष्कर्ष रखें। सामान्य कथन के साथ खेलों के ठोस लाभ तथा सुरक्षित अभ्यास की सावधानियाँ भी जोड़ें।

चरण 1: विषय का केंद्र और रूपरेखा तय करना आरंभ में स्वास्थ्य को शरीर और मन की स्वस्थ अवस्था से जोड़ें। इसके बाद दौड़ने, तैरने और सामूहिक खेलों से मिलने वाले लाभ समझाएँ। शारीरिक क्षमता के साथ सहयोग, अनुशासन तथा तनाव से मुक्ति पर भी विचार करें। अंत में आयु और क्षमता के अनुसार नियमित खेल अपनाने का संदेश दें।

चरण 2: विचारों को तार्किक क्रम में रखना पहले शरीर पर प्रभाव, फिर मन तथा व्यवहार पर प्रभाव और अंत में दैनिक जीवन में खेलों का स्थान रखें। केवल खेलों के नाम गिनाने से विषय पूरा नहीं होगा; यह भी बताएँ कि नियमित अभ्यास स्वास्थ्य को कैसे सहारा देता है। खेल के साथ पौष्टिक भोजन, पर्याप्त नींद और विश्राम की आवश्यकता स्वीकार करने से अनुच्छेद संतुलित बनता है।

चरण 3: पूरा आदर्श अनुच्छेद **खेल और स्वास्थ्य**

स्वस्थ जीवन के लिए खेल उतने ही आवश्यक हैं जितना संतुलित भोजन और पर्याप्त विश्राम। नियमित रूप से दौड़ने, तैरने या कोई खेल खेलने से शरीर सक्रिय रहता है, मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं और सहनशक्ति बढ़ती है। पढ़ाई तथा काम के बीच खेल मन को ताजगी देते हैं और तनाव घटाने में सहायता करते हैं। सामूहिक खेलों में हम सहयोग, अनुशासन, धैर्य और हार को स्वीकार करना सीखते हैं। ये गुण मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक संबंधों को भी बेहतर बनाते हैं। आज मोबाइल तथा कंप्यूटर के अत्यधिक उपयोग ने शारीरिक गतिविधि कम कर दी है। इसलिए बच्चों और बड़ों, सभी को प्रतिदिन अपनी क्षमता के अनुसार खेलने का समय निकालना चाहिए। खेलते समय उचित अभ्यास, सुरक्षित स्थान और आवश्यक विश्राम का ध्यान रखना चाहिए। जीतने की होड़ में चोट की उपेक्षा करना अनुचित है। खेलों

का वास्तविक उद्देश्य स्वस्थ, प्रसन्न और संतुलित जीवन बनाना है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार खेल शारीरिक स्फूर्ति, मानसिक प्रसन्नता और स्वस्थ सामाजिक व्यवहार को एक साथ विकसित करते हैं। नियमित तथा सुरक्षित खेल-अभ्यास को दिनचर्या का अंग बनाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: अनुच्छेद लिखते समय शरीर, मन और व्यवहार पर खेलों के प्रभाव जोड़ें तथा अंत में नियमित अभ्यास का स्पष्ट संदेश दें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

विज्ञापनों का हमारे जीवन पर प्रभाव [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में विज्ञापनों के उपयोगी और हानिकारक प्रभावों को एक केंद्रीय विचार से जोड़ना है। जानकारी देना तथा उपभोक्ता की पसंद को प्रभावित करना विज्ञापन के दो प्रमुख पक्ष हैं।
- प्रभावी अनुच्छेद में शीर्षक, विषय का परिचय, उदाहरणों सहित विचार-विस्तार और विवेकपूर्ण निष्कर्ष होता है। भाषा स्पष्ट और विचार आपस में जुड़े होने चाहिए।

चरण 1: विचारों की रूपरेखा बनाना आरंभ में दैनिक जीवन में विज्ञापनों की व्यापक उपस्थिति बताएँ। मुख्य भाग में नए उत्पादों, सेवाओं और उपयोगी जनसंदेशों की जानकारी मिलने का लाभ रखें। इसके बाद आकर्षक दावों, अनावश्यक खरीदारी और दिखावे की प्रवृत्ति जैसी समस्याएँ स्पष्ट करें। समापन में आवश्यकता, गुणवत्ता तथा कीमत देखकर निर्णय लेने का संदेश दें।

चरण 2: संतुलित दृष्टिकोण और भाषा चुनना सभी विज्ञापनों को झूठा कहना उचित नहीं है। इसी प्रकार किसी आकर्षक प्रचार को वस्तु की गुणवत्ता का प्रमाण भी नहीं मानना चाहिए। उपभोक्ता की जिम्मेदारी तथा विज्ञापनदाता की सत्यनिष्ठा, दोनों का उल्लेख करें। वास्तविक जीवन के सामान्य उदाहरण विषय स्पष्ट करते हैं; किसी ब्रांड का प्रचार करने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य उत्तर को सूची के बजाय एक सुसंबद्ध अनुच्छेद में प्रस्तुत करें।

चरण 3: पूरा आदर्श अनुच्छेद **विज्ञापनों का हमारे जीवन पर प्रभाव**

आज समाचारपत्र, दूरदर्शन, मोबाइल और सड़कों के होर्डिंग हमें लगातार विज्ञापनों से परिचित कराते हैं। विज्ञापन नए उत्पादों और सेवाओं की जानकारी देते हैं तथा उपलब्ध विकल्पों की तुलना में सहायता करते हैं। स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा संबंधी जनहित के विज्ञापन समाज में जागरूकता भी फैलाते हैं। किंतु उनका दूसरा पक्ष उपभोक्ता की इच्छाओं को बढ़ाना है। आकर्षक चित्र, प्रसिद्ध व्यक्तियों का समर्थन और बड़ी छूट के दावे हमें कई बार अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चे विशेष रूप से चमकदार प्रचार से प्रभावित होते हैं। सौंदर्य और सफलता को महँगी वस्तुओं से जोड़ने वाले संदेश हीनभावना तथा दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ा सकते हैं। इसलिए विज्ञापन देखते समय विवेक आवश्यक है। हमें अपनी जरूरत, वस्तु की गुणवत्ता, कीमत और दावे की विश्वसनीयता जाँचकर खरीदारी करनी चाहिए। विज्ञापनदाताओं का भी दायित्व है कि वे भ्रामक आश्वासन न दें। सजग उपभोक्ता विज्ञापन से जानकारी लेता है, पर अपना निर्णय सोच-समझकर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष विज्ञापन जानकारी और जनजागरूकता का उपयोगी माध्यम हैं, किंतु उनका प्रभाव समझकर विवेकपूर्ण खरीदारी करना आवश्यक है। सत्यनिष्ठ प्रचार और सजग उपभोक्ता मिलकर इनके लाभ बढ़ा सकते हैं।

त्वरित सुझाव: लाभ, दुष्प्रभाव और सजग उपभोक्ता की भूमिका, इन तीन बिंदुओं को जोड़कर विज्ञापन-विषयक अनुच्छेद संतुलित बनाएँ।

4. विद्यालय में आयोजित खेल दिवस और पुरस्कार वितरण के अवसर पर जिला खेल अधिकारी को पत्र लिखकर आमन्त्रित कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न किसी अधिकारी को विद्यालय के समारोह में आमंत्रित करने वाले औपचारिक पत्र का अभ्यास कराता है। भाषा विनम्र, स्पष्ट और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- निमंत्रण में आयोजन का उद्देश्य, तिथि, समय, स्थान तथा आमंत्रित अधिकारी की अपेक्षित भूमिका स्पष्ट की जाती है। पत्र में प्रेषक, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें विद्यालय के प्रधानाचार्य की ओर से जिला खेल अधिकारी को पत्र लिखा जा सकता है। ऊपर विद्यालय का पता और दिनांक दें। इसके बाद प्राप्तकर्ता का पद और कार्यालय का पता लिखें। विषय में खेल दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण का उल्लेख करें।

चरण 2: निमंत्रण की विषयवस्तु तैयार करें पहले आयोजन का परिचय दें। फिर निश्चित तिथि, समय और स्थल लिखें। अधिकारी से मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार देने का अनुरोध करें। उनके आगमन से विद्यार्थियों को मिलने वाली प्रेरणा बताएँ और सुविधानुसार स्वीकृति भेजने का आग्रह करें। पत्र का स्वर सम्मानपूर्ण रहे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लाजपत नगर, नई दिल्ली

दिनांक : 10 नवंबर, 2019

सेवा में, जिला खेल अधिकारी जिला खेल कार्यालय नई दिल्ली

विषय : खेल दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में 20 नवंबर, 2019 को प्रातः 10 बजे वार्षिक खेल दिवस तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम विद्यालय के खेल मैदान में होगा। इस अवसर पर दौड़, लंबी कूद और विभिन्न सामूहिक खेलों की प्रतियोगिताएँ होंगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करें। खेलों के क्षेत्र में आपका अनुभव और मार्गदर्शन विद्यार्थियों को अनुशासन, परिश्रम तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की प्रेरणा देगा। आपकी उपस्थिति हमारे विद्यालय परिवार के लिए गौरव का विषय होगी।

कृपया अपनी स्वीकृति से हमें यथाशीघ्र अवगत कराएँ, ताकि आवश्यक व्यवस्थाएँ समय पर की जा सकें।

धन्यवाद।

भवदीय अजय कुमार प्रधानाचार्य

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में आयोजन का पूरा विवरण और जिला खेल अधिकारी से मुख्य अतिथि बनकर पुरस्कार प्रदान करने का विनम्र अनुरोध दिया गया है।

त्वरित सुझाव: निमंत्रण-पत्र लिखते समय तिथि, समय, स्थान और अतिथि की भूमिका अवश्य जाँच लें।

अथवा

4. किसी समाचार-पत्र के संपादक को 'नारी शिक्षा' की निरंतर सुधरती स्थिति के संदर्भ में संतोष व्यक्त करते हुए अपने विचार लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न सामाजिक विषय पर विचार व्यक्त करने वाले संपादक के नाम औपचारिक पत्र का अभ्यास कराता है। विषय नारी शिक्षा की सुधरती स्थिति पर संतोष व्यक्त करना है।
- पत्र में सुधार के संकेत, उनके सामाजिक लाभ और प्रगति को आगे बढ़ाने के सुझाव संतुलित ढंग से रखें। अप्रमाणित आँकड़े देने के बजाय सामान्य सामाजिक परिवर्तनों का उल्लेख करें।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य स्पष्ट करें प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर संपादक को संबोधित करें। विषय में नारी शिक्षा की सुधरती स्थिति पर संतोष का उल्लेख हो। पत्र समाचार-पत्र के पाठकों तक अपने विचार पहुँचाने के उद्देश्य से लिखा जाए। इसलिए संबोधन सम्मानपूर्ण और विचार सार्वजनिक महत्त्व के हों।

चरण 2: विचारों का क्रम बनाएँ पहले लड़कियों की शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता पर प्रसन्नता व्यक्त करें। फिर पारिवारिक सोच में परिवर्तन, शैक्षिक अवसर और आत्मनिर्भरता की चर्चा करें। अंत में शिक्षा से वंचित बालिकाओं तक सुविधाएँ पहुँचाने का सुझाव दें। संतोष व्यक्त करते हुए भी आगे के प्रयासों की आवश्यकता बताना विचारों को संतुलित बनाता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार नई दिल्ली

दिनांक : 10 नवंबर, 2019

सेवा में, संपादक महोदय दैनिक जनवाणी नई दिल्ली

विषय : नारी शिक्षा की निरंतर सुधरती स्थिति पर संतोष।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं नारी शिक्षा की निरंतर सुधरती स्थिति पर संतोष व्यक्त करना चाहता हूँ। यह प्रसन्नता की बात है कि अब अनेक परिवार बेटियों की पढ़ाई को महत्त्व देने लगे हैं। विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक लड़कियाँ अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं।

शैक्षिक सुविधाओं के विस्तार, छात्रवृत्तियों और सामाजिक जागरूकता ने इस परिवर्तन को गति दी है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति सजग होती हैं और आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती हैं। उनकी शिक्षा परिवार के स्वास्थ्य, बच्चों के भविष्य तथा समाज की प्रगति को भी बेहतर बनाती है।

इस उपलब्धि पर संतोष करते हुए हमें ग्रामीण क्षेत्रों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुरक्षित विद्यालय, पर्याप्त सुविधाएँ और परिवार का प्रोत्साहन उन्हें पढ़ाई जारी रखने में सहायता देंगे।

आशा है, आप इन विचारों को प्रकाशित कर नारी शिक्षा के पक्ष में जागरूकता बढ़ाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में नारी शिक्षा की प्रगति पर संतोष, उसके सामाजिक लाभ और शेष बाधाएँ दूर करने के सुझाव औपचारिक रूप में प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को लिखते समय विषय पर स्पष्ट मत दें और अंत में उसके प्रकाशन का विनम्र अनुरोध करें।

5(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

एंकर बाइट किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार की प्रस्तुति में एंकर और संबंधित व्यक्ति की बाइट का संयोजन एंकर बाइट कहलाता है।
- बाइट किसी घटना से जुड़े व्यक्ति का रिकॉर्ड किया गया संक्षिप्त कथन या प्रतिक्रिया होती है।

चरण 1: प्रस्तुति का क्रम समझें इस प्रारूप में एंकर पहले समाचार की आवश्यक सूचना देता है। इसके बाद उसी समाचार से जुड़े व्यक्ति का कथन या प्रतिक्रिया सुनाई और दिखाई जाती है।

चरण 2: बाइट की भूमिका पहचानें संबंधित व्यक्ति की आवाज़ में दिया गया छोटा वक्तव्य समाचार की पुष्टि करता है अथवा उसका पक्ष सामने लाता है। केवल एंकर द्वारा समाचार पढ़ देना एंकर बाइट की पूरी प्रस्तुति नहीं है; उसके साथ संबंधित बाइट भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष जब एंकर के समाचार प्रस्तुत करने के बाद उससे संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन या प्रतिक्रिया दिखाई-सुनाई जाती है, तो इसे एंकर बाइट कहते हैं।

त्वरित सुझाव: एंकर बाइट की पहचान के लिए एंकर की सूचना और संबंधित व्यक्ति के संक्षिप्त कथन का क्रम याद रखें।

5(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भारत में रेडियो का प्रारम्भ कब हुआ ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भारत में रेडियो प्रसारण के आरंभिक इतिहास का तथ्य पूछता है।
- प्रारंभिक रेडियो प्रसारण और बाद में स्थापित नियमित प्रसारण सेवाओं की तिथियाँ अलग-अलग हैं।

चरण 1: प्रारंभिक प्रसारण का वर्ष बताएँ भारत में रेडियो प्रसारण का प्रारंभ 1923 में हुआ। यह आरंभ बंबई के रेडियो क्लब द्वारा किए गए प्रसारण से जुड़ा है। इस प्रश्न में रेडियो के प्रारंभ का वर्ष पूछा गया है।

चरण 2: बाद के विकास से अंतर रखें 1927 में बंबई और कलकत्ता में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी के प्रसारण केंद्र स्थापित हुए। यह रेडियो के विकास का अगला चरण था। इसलिए आरंभिक रेडियो प्रसारण के उत्तर में 1923 लिखना चाहिए; बाद के नियमित केंद्रों का वर्ष उससे अलग है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में रेडियो का प्रारंभ 1923 में बंबई के रेडियो क्लब के प्रसारण से हुआ।

त्वरित सुझाव: रेडियो के प्रारंभ के लिए 1923 और बाद के प्रसारण केंद्रों के लिए 1927 का अंतर याद रखें।

5(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जनसंचार के कोई दो कार्य लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार के माध्यम समाचार, विचार और ज्ञान व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाते हैं।
- सूचना और शिक्षा जनसंचार के प्रमुख सामाजिक कार्य हैं।

चरण 1: सूचना देने का कार्य जनसंचार देश-दुनिया की घटनाओं, सार्वजनिक निर्णयों और जनहित की सूचनाओं से लोगों को अवगत कराता है। समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविजन इसके प्रमुख साधन हैं।

चरण 2: शिक्षित करने का कार्य जनसंचार स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण तथा नागरिक अधिकारों जैसे विषयों पर उपयोगी जानकारी देकर लोगों को शिक्षित और जागरूक करता है। इससे समाज की समझ और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो कार्य हैं—सूचना देना तथा जनता को शिक्षित करना।

त्वरित सुझाव: कार्य पूछे जाने पर माध्यमों के नाम देने के बजाय सूचना और शिक्षा जैसे कार्य स्पष्ट लिखें।

5(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

स्वतंत्र पत्रकार से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार-संगठन की नियमित नौकरी से बँधा नहीं होता।
- वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं या अन्य माध्यमों को अपनी रचनाएँ पारिश्रमिक पर उपलब्ध कराता है।

चरण 1: रोजगार की स्थिति समझें स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचारपत्र या मीडिया संस्थान का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह अपने विवेक से विषय चुनकर समाचार, लेख या अन्य पत्रकारितापरक सामग्री तैयार करता है।

चरण 2: काम करने का स्वरूप बताएँ वह अलग-अलग समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और संचार संस्थानों के लिए सामग्री लिखता है तथा प्रकाशित या स्वीकृत सामग्री के लिए पारिश्रमिक प्राप्त करता है। उसका स्वतंत्र होना तथ्य-जाँच और पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारियों से मुक्त होना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी एक संस्थान से नियमित रूप से संबद्ध हुए बिना विभिन्न माध्यमों के लिए पारिश्रमिक पर लिखने वाला पत्रकार स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में एक संस्थान की नियमित नौकरी न करना और विभिन्न माध्यमों के लिए लिखना, दोनों बातें जोड़ें।

5(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खोजी पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता में सार्वजनिक हित से जुड़े छिपाए गए तथ्यों की व्यवस्थित पड़ताल की जाती है।
- इसके निष्कर्ष दस्तावेजों, प्रमाणों और विश्वसनीय स्रोतों की जाँच पर आधारित होते हैं।

चरण 1: छिपे हुए तथ्यों की पड़ताल खोजी पत्रकारिता सत्ता, प्रशासन या अन्य संस्थाओं में छिपे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और जनहित-विरोधी गतिविधियों का पता लगाती है। पत्रकार केवल प्राप्त सूचना दोहराने के बजाय विषय की गहराई से जाँच करता है।

चरण 2: प्रमाण के साथ खुलासा पत्रकार दस्तावेजों, संबंधित व्यक्तियों और अन्य स्रोतों से तथ्य जुटाता है तथा उनका सत्यापन करके वास्तविकता जनता के सामने लाता है। इसलिए अपुष्ट आरोप या सनसनी फैलाना खोजी पत्रकारिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित से जुड़े छिपे तथ्यों, भ्रष्टाचार या अनियमितताओं की प्रमाण-आधारित जाँच करके उनका खुलासा करना खोजी पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: खोजी पत्रकारिता की पहचान बताते समय छिपे तथ्य, गहन जाँच और प्रमाण-आधारित खुलासे को साथ रखें।

6. 'आतंकवाद' विषय पर एक आलेख लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारपरक विवेचन होता है।
- शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, मुख्य विवेचन और निष्कर्ष आलेख को सुव्यवस्थित बनाते हैं।

चरण 1: आलेख का प्रारूप निर्धारित करें आलेख का शीर्षक विषय की समस्या और उसके समाधान की दिशा स्पष्ट करे। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया जाए। भूमिका में आतंकवाद का आशय, मध्य भाग में उसके प्रभाव और अंत में रोकथाम के उपाय रखें।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना बनाएँ आतंकवाद को भय पैदा करने वाली संगठित हिंसा के रूप में समझाएँ। निर्दोष नागरिकों, सामाजिक सौहार्द और विकास पर उसके प्रभाव बताएँ। किसी समुदाय को दोष देने के बजाय कानून, सतर्कता, शिक्षा और सहयोग पर बल दें।

चरण 3: पूरा आदर्श आलेख **आतंकवाद : मानवता के सामने चुनौती**

लेखक : अजय कुमार

आतंकवाद हिंसा और भय के सहारे अपने राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्य थोपने का अमानवीय प्रयास है। इसका सबसे बड़ा शिकार सामान्य नागरिक होता है। निर्दोष लोगों की मृत्यु, परिवारों का उजड़ना और असुरक्षा का वातावरण पूरे समाज को आहत करते हैं।

आतंकवाद का प्रभाव किसी एक घटना तक सीमित नहीं रहता। वह आपसी विश्वास को कमजोर करता है, सांप्रदायिक तनाव बढ़ाता है और विकास के संसाधनों को सुरक्षा की ओर मोड़ देता है। इसलिए किसी धर्म या समुदाय को आतंकवाद से जोड़ना समस्या का समाधान नहीं है; इससे विभाजन और गहरा होता है।

इसके विरुद्ध प्रभावी खुफिया तंत्र, निष्पक्ष कानून-व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक हैं। साथ ही युवाओं को शिक्षा, रोजगार और संवाद के अवसर मिलने चाहिए, ताकि कट्टर विचार उन्हें बहका न सकें। नागरिकों को संदिग्ध गतिविधियों की सूचना जिम्मेदारी से देनी चाहिए तथा अफवाहें फैलाने से बचना चाहिए। मानवता, न्याय और सामाजिक एकता की रक्षा करके ही आतंकवाद को पराजित किया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख आतंकवाद के स्वरूप, उसके सामाजिक प्रभाव और रोकथाम के उपायों का क्रमबद्ध विवेचन करता है।

त्वरित सुझाव: आतंकवाद पर आलेख में समस्या का वर्णन करके रुकें नहीं; सामाजिक एकता और व्यावहारिक रोकथाम के उपाय भी दें।

अथवा

6. अपने द्वारा हाल ही में पढ़ी गई किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में पुस्तक और लेखक का परिचय, विषय-वस्तु तथा गुण-दोषों का संतुलित मूल्यांकन होता है।
- कथासार को संक्षिप्त रखते हुए भाषा, पात्र, उद्देश्य और पाठकीय उपयोगिता पर विचार करना चाहिए।

चरण 1: पुस्तक तथा प्रारूप चुनें उदाहरण के लिए मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' लिया गया है। समीक्षा में पुस्तक और लेखक का नाम दें, संक्षिप्त कथापरिचय लिखें तथा विशेषताओं और सीमाओं का मूल्यांकन करके अपनी राय प्रस्तुत करें।

चरण 2: मूल्यांकन की योजना बनाएँ दहेज और अनमेल विवाह के कारण स्त्री के जीवन में उत्पन्न त्रासदी को केंद्रीय विषय रखें। निर्मला और तोताराम के संबंध तथा संदेह के दुष्परिणामों का उल्लेख करें। भाषा, चरित्र-चित्रण और सामाजिक प्रासंगिकता पर संतुलित टिप्पणी दें।

चरण 3: पूरी आदर्श समीक्षा **'निर्मला' : सामाजिक कुरीतियों का मार्मिक चित्रण**

पुस्तक : निर्मला

लेखक : मुंशी प्रेमचंद

हाल ही में मैंने प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' पढ़ा। यह दहेज, अनमेल विवाह और पारिवारिक अविश्वास के कारण उत्पन्न स्त्री-जीवन की त्रासदी को सामने लाता है। आर्थिक विवशता के कारण युवा निर्मला का विवाह उससे अधिक आयु के विधुर तोताराम से होता है। इसके बाद संदेह और संवादहीनता परिवार के सुख को नष्ट कर देते हैं।

उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामाजिक संवेदनशीलता है। निर्मला की पीड़ा व्यक्तिगत दुख तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उस व्यवस्था पर प्रश्न उठाती है जिसमें स्त्री के जीवन का निर्णय उसकी इच्छा की उपेक्षा करके किया जाता है। तोताराम का संदेह मानवीय संबंधों में विश्वास के महत्त्व को उजागर करता है।

प्रेमचंद की भाषा सहज, प्रभावशाली और पात्रानुकूल है। संवाद पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट करते हैं। घटनाओं में दुख की निरंतरता कभी-कभी पाठक को अत्यधिक विषाद से भर देती है, फिर भी सामाजिक समस्या की गंभीरता सामने लाने में यह प्रभावी है।

'निर्मला' आज भी प्रासंगिक है। यह पाठक को दहेज, स्त्री-असमानता और अविश्वास के विरुद्ध सोचने को प्रेरित करती है। सामाजिक उपन्यासों में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पठनीय पुस्तक है।

चरण 4: निष्कर्ष इस समीक्षा में 'निर्मला' का परिचय, संक्षिप्त कथ्य, कलात्मक विशेषताएँ, एक सीमा और पाठकीय उपयोगिता प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: पुस्तक-समीक्षा को केवल कहानी का सार न बनाएँ; भाषा, प्रभाव, सीमा और अपनी अंतिम राय अवश्य जोड़ें।

7. 'स्वामी विवेकानंद' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्य, रोचक प्रस्तुति और मानवीय संवेदना के माध्यम से विषय को जीवंत बनाता है।
- व्यक्तित्व पर फ़ीचर लिखते समय प्रमाणित जीवन-प्रसंगों को विचारों और वर्तमान उपयोगिता से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: फ़ीचर का प्रारूप तय करें एक आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ किसी प्रभावशाली प्रसंग से करें, फिर व्यक्तित्व, विचार और प्रेरक योगदान प्रस्तुत करें। अंत पाठक को उस व्यक्तित्व की प्रासंगिकता का अनुभव कराए।

चरण 2: प्रमाणित सामग्री चुनें विवेकानंद का मूल नाम नरेंद्रनाथ दत्त, रामकृष्ण परमहंस से उनका संबंध, 1893 का शिकागो धर्म-संसद संबोधन और 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना जैसे प्रमाणित प्रसंग लें। मानव-सेवा, आत्मविश्वास और धार्मिक सहिष्णुता को केंद्र में रखें।

चरण 3: पूरा आदर्श फ़ीचर **स्वामी विवेकानंद : युवाओं में जागता आत्मविश्वास**

लेखक : अजय कुमार

शिकागो की धर्म-संसद में एक भारतीय संन्यासी ने जब श्रोताओं को अमेरिकी बहनों और भाइयों के रूप में संबोधित किया, तो सभागार में आत्मीयता का एक नया अनुभव जागा। वर्ष 1893 का वह प्रसंग स्वामी विवेकानंद के विश्वमानवता के संदेश का प्रतीक बन गया।

12 जनवरी, 1863 को जन्मे नरेंद्रनाथ दत्त बचपन से जिज्ञासु और तर्कशील थे। रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य ने उनकी आध्यात्मिक खोज को दिशा दी। विवेकानंद के लिए धर्म केवल कर्मकांड नहीं था; वह मनुष्य के भीतर निहित शक्ति को पहचानने और पीड़ित की सेवा करने का माध्यम था।

भारत-भ्रमण के दौरान उन्होंने गरीबी और अभाव को निकट से देखा। उन्हें अनुभव हुआ कि समाज की उन्नति के लिए शिक्षा, आत्मसम्मान और सेवा आवश्यक हैं। 1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन ने सेवा के इस विचार को संगठित रूप दिया।

उनका व्यक्तित्व युवाओं को निर्भय होकर काम करने, अपने सामर्थ्य पर विश्वास रखने और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने की प्रेरणा देता है। आज प्रतियोगिता और निराशा के बीच उनकी सीख और भी उपयोगी है। विवेकानंद को याद करने का सार्थक तरीका उनकी तस्वीर पर फूल चढ़ाना भर नहीं, बल्कि अपने ज्ञान और श्रम को समाज के हित में लगाना है।

चरण 4: निष्कर्ष यह फ़ीचर स्वामी विवेकानंद के जीवन-प्रसंगों, सेवा-दृष्टि और युवाओं के लिए उनकी प्रेरणा को रोचक ढंग से प्रस्तुत

करता है।

त्वरित सुझाव: व्यक्तित्व पर फ़ीचर में जन्म और तिथियों की सूची के साथ जीवंत प्रसंग तथा आज की प्रासंगिकता भी जोड़ें।

अथवा

7. 'मेरा बचपन' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी विषय के मानवीय पक्ष को रोचक, चित्रात्मक और संवेदनापूर्ण शैली में प्रस्तुत किया जाता है।
- बचपन पर फ़ीचर लिखते समय स्मृतियों, खेलों, पारिवारिक स्नेह और वर्तमान जीवन से उनके संबंध को उभारा जा सकता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। किसी सजीव स्मृति से आरंभ करके खेल, मित्रों और घर के वातावरण का वर्णन करें। अंत में बचपन से मिली सीख तथा उसकी स्थायी महत्ता बताएँ। फ़ीचर को केवल घटनाओं की सूची बनाने के स्थान पर अनुभवों और भावनाओं का चित्र बनाना चाहिए।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर मेरा बचपन: यादों की धूप

लेखक: अजय

पुराने संदूक से निकली कागज़ की नाव ने मुझे फिर बचपन की गलियों में पहुँचा दिया। लगता है, जैसे कल ही की बात हो, जब बारिश होते ही हम दोस्त घर से बाहर दौड़ पड़ते थे। पानी की छोटी-सी धारा हमारे लिए विशाल नदी बन जाती थी।

मेरे बचपन की सुबह माँ की पुकार से खुलती और शाम दादी की कहानियों के साथ ढलती थी। विद्यालय की घंटी, दोस्तों की हँसी और छुट्टी के बाद की उछलकूद जीवन को उत्सव बना देते थे। कभी पतंग कटने पर उदासी छा जाती, तो कभी कंचे जीतकर हम स्वयं को दुनिया का सबसे बड़ा विजेता मान लेते।

गर्मियों की दोपहर में आम के पेड़ की छाया हमारा अड्डा थी। वहीं मित्रता निभाना, अपनी चीज़ बाँटना और झगड़े के बाद फिर गले मिलना सीखा। छोटी-छोटी गलतियों पर बड़ों की डाँट भी मिली, लेकिन उनके स्नेह ने हर डर दूर कर दिया।

आज समय की तेज़ रफ़्तार में वे दिन दूर लगते हैं। फिर भी किसी बच्चे की खिलखिलाहट सुनते ही अपना बचपन लौट आता है। वह केवल बीता समय नहीं, मेरे भीतर बची सरलता और उत्साह का स्रोत है। काश, हम बड़े होकर भी छोटी खुशियों को सहेजना न भूलें!

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में निजी स्मृतियों और सजीव दृश्यों के माध्यम से बचपन की निश्छलता तथा जीवन में उसके महत्त्व को उभारा गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी छोटी वस्तु या घटना की स्मृति से करें; उससे दृश्य और भाव अपने-आप जुड़ने लगेंगे।

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुए चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने ।

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). प्रात:काल के आकाश की तुलना किससे की गई है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु के गुण को स्पष्ट करने के लिए उसकी तुलना दूसरी परिचित वस्तु से की जाती है।
- कवि भोर के आकाश के रंग और उसकी स्वच्छता को घरेलू तथा प्राकृतिक उपमानों से मूर्त बनाता है।

चरण 1: मुख्य तुलना पहचानें प्रात:काल के आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की गई है। काव्यांश की आरंभिक पंक्ति में शंख का उल्लेख इसी रूप में आया है। यहाँ शंख की आकृति की अपेक्षा उसका गहरा नीला रंग प्रमुख है।

चरण 2: तुलना का कारण स्पष्ट करें सूर्योदय से पहले आकाश में गहरी नीलिमा दिखाई देती है। उसका निर्मल, शांत और निखरा हुआ रूप नीले शंख का स्मरण कराता है। इस परिचित उपमान से कवि आकाश के रंग को पाठक की आँखों के सामने साकार कर देता है। आगे राख से लीपे चौके, काली सिल और स्लेट के बिंब उसी आकाश के बदलते रंगों को व्यक्त करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रात:कालीन आकाश बहुत नीले शंख जैसा है, क्योंकि सूर्योदय से पहले उसका रंग गहरा नीला, स्वच्छ और शांत दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में उपमान के साथ उसकी समानता अवश्य लिखें; यहाँ मुख्य समानता गहरी नीलिमा है।

8(ख). राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब दृश्य को पाठक की कल्पना में मूर्त बनाता है।
- भोर के आकाश का धूसर रंग और नमी राख से लीपे गीले चौके के माध्यम से व्यक्त हुए हैं।

चरण 1: चौके का दृश्य समझें ग्रामीण घरों में राख से लीपा हुआ चौका हलका धूसर और कुछ सफेद-सा दिखता है। अभी-अभी लीपे जाने पर उसमें गीलापन भी रहता है। कवि ने इसी परिचित घरेलू दृश्य को भोर के आकाश से जोड़ा है।

चरण 2: भोर से समानता जोड़ें प्रात:काल अँधेरा धीरे-धीरे कम होता है, लेकिन सूर्य का तेज़ प्रकाश अभी नहीं फैला होता। इस समय आकाश का रंग धूसर और नम-सा दिखाई देता है। इसलिए वह राख से लीपे चौके जैसा लगता है। कोष्ठक में आया गीलेपन का संकेत सुबह की ताजगी और आर्द्रता को अधिक सजीव बनाता है; यह वास्तविक चौके का वर्णन नहीं, आकाश की छटा का काव्यात्मक चित्र है। इससे प्रकृति और घरेलू जीवन के बीच आत्मीय संबंध भी दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष भोर के आकाश की धूसर आभा और नम ताजगी के कारण उसे राख से लीपा हुआ, अभी गीला पड़ा चौका कहा गया है।

त्वरित सुझाव: राख के रंग को आकाश की धूसरता से और गीलेपन को सुबह की नमी से जोड़कर उत्तर दें।

8(ग). भोर के बारे में कवि द्वारा व्यक्त की गई संभावनाओं में आपको कौन-सी सबसे रुचिकर लगी ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत रुचि के प्रश्न में काव्यांश का कोई एक बिंब चुनकर उसके आकर्षण का कारण देना चाहिए।
- स्लेट और लाल खड़िया का बिंब अँधेरे आकाश में उभरती सुबह की लालिमा का सहज चित्र है।

चरण 1: प्रिय बिंब चुनें मुझे स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिए जाने की संभावना सबसे रुचिकर लगी। इसमें कवि ने आकाश जैसे विराट प्राकृतिक दृश्य को बच्चों के परिचित अनुभव से जोड़ दिया है। स्लेट की गहरी पृष्ठभूमि पर लाल रंग का उभरना तुरंत आँखों के सामने आ जाता है।

चरण 2: पसंद का कारण बताएँ भोर में शेष अँधेरे के बीच फैलती लाली ऐसी लगती है जैसे गहरी स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया मल दी हो। यह तुलना रंगों का विरोध और सुबह के क्रमिक परिवर्तन को एक साथ स्पष्ट करती है। इसके भीतर बालसुलभ कल्पना, सहजता और चंचलता भी है। इसीलिए यह बिंब मुझे सुंदर और आत्मीय लगता है; इसमें प्रकृति का सौंदर्य किसी कठिन उपमान के बिना समझ में आ जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्लेट पर लाल खड़िया मलने का बिंब मुझे सबसे रुचिकर लगा, क्योंकि वह अँधेरे आकाश में फैलती लालिमा को सहज, रंगपूर्ण और आत्मीय रूप देता है।

त्वरित सुझाव: अपनी पसंद का एक ही बिंब चुनें और उसका रंग, दृश्य तथा भावात्मक प्रभाव समझाएँ।

अथवा

8. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [6 अंक]

8(क). भाव समझाइए : "मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन के आत्म-परिचय में कवि की निजी अनुभूतियों और बाहरी संसार के बीच अंतर व्यक्त हुआ है।
- यहाँ जग कवि की कल्पना और इच्छाओं से निर्मित भाव-जगत का संकेत है, वास्तविक पृथ्वी के निर्माण-विनाश का नहीं।

चरण 1: बनाने और मिटाने का आशय कवि प्रतिदिन अपनी आशाओं, सपनों और भावनाओं से अनेक कल्पना-जगत रचता है। जब वे उसके मन को संतुष्ट नहीं कर पाते या उसकी अनुभूतियाँ बदल जाती हैं, तो वह उन्हें छोड़कर नए जगत की रचना करने लगता है। बनाना और मिटाना इसी निरंतर मानसिक तथा रचनात्मक प्रक्रिया का रूपक है।

चरण 2: कवि की मन:स्थिति स्पष्ट करें इस कथन में कवि की भावुकता, कल्पनाशीलता और अपने अनुरूप संसार खोजने की आकांक्षा प्रकट होती है। बाहरी जीवन की सीमाएँ उसके स्वप्नों से मेल नहीं खातीं। इसलिए वह किसी एक बने-बनाए संसार को अंतिम नहीं मानता। रोज़ शब्द उसकी इस प्रक्रिया की निरंतरता बताता है; अनेक जगत बनाना उसके मन की समृद्धि और बेचैनी दोनों को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने सपनों और भावनाओं से प्रतिदिन नए कल्पना-जगत रचता है और असंतोष होने पर उन्हें मिटा देता है; यह

उसकी निरंतर सृजनशील तथा संवेदनशील मन:स्थिति का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: जग को कल्पना-जगत मानकर भाव समझाएँ; पंक्ति का अर्थ भौतिक संसार का वास्तविक विनाश नहीं है।

8(ख). पृथ्वी को ठुकराने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्म-परिचय में कवि की मूल्यदृष्टि सांसारिक धन और वैभव से अलग है।
- जग जिस पृथ्वी पर वैभव जोड़ता है, उसे ठुकराना भौतिक संचय के आकर्षण का अस्वीकार है।

चरण 1: पृथ्वी का प्रसंग समझें कवि स्पष्ट करता है कि सामान्य संसार पृथ्वी पर धन, संपत्ति और वैभव जुटाता रहता है। उसके लिए पृथ्वी इसी सांसारिक संचय और भौतिक उपलब्धियों का आधार है। किंतु कवि का व्यक्तित्व इन उपलब्धियों को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य नहीं मानता।

चरण 2: ठुकराने का कारण बताएँ कवि प्रेम, निजी अनुभूतियों और अपने स्वतंत्र भाव-जगत को अधिक मूल्यवान मानता है। भौतिक संपन्नता उसके हृदय की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं करती। इसलिए वह हर कदम पर वैभव के आकर्षण को अस्वीकार करता है। पृथ्वी को ठुकराना धरती या प्रकृति से घृणा नहीं, धन-संचय में डूबे संसार की मूल्यदृष्टि से असहमति है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि पृथ्वी को इसलिए ठुकराता है कि संसार उस पर धन और वैभव जुटाता है, जबकि वह भौतिक संपत्ति से अधिक प्रेम, अनुभूति और अपने स्वतंत्र भाव-जगत को महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: पृथ्वी को ठुकराने का कारण वैभव जोड़ने वाली पिछली पंक्ति से निकालें; धन के प्रति अनासक्ति स्पष्ट करें।

8(ग). कवि ने स्वयं को खंडहर का भाग क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्म-परिचय में खंडहर कवि के दुखभरे किंतु आत्मीय जीवन का प्रतीक है।
- प्रासाद और खंडहर का विरोध बाहरी संपन्नता तथा भीतरी अनुभूति के मूल्य का अंतर खोलता है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ स्पष्ट करें कवि का जीवन दुख, विरह और टूटे हुए सपनों से भरा है। इसलिए वह अपने हिस्से को खंडहर कहता है। खंडहर यहाँ केवल उजड़ी इमारत नहीं, उसके हृदय की व्यथा और विफल आकांक्षाओं का भावात्मक रूप है। अपने रोदन में राग लेकर चलना भी इसी दुखमय अनुभूति को रचनात्मक बनाने का संकेत देता है।

चरण 2: खंडहर की श्रेष्ठता समझें कवि इस दुखभरे संसार को तुच्छ नहीं मानता। उसमें प्रेम की स्मृतियाँ, आत्मीय अनुभूतियाँ और संवेदना की ऐसी समृद्धि है कि राजाओं के भव्य महल भी उस पर न्योछावर किए जा सकते हैं। वह सांसारिक वैभव की अपेक्षा अपने अंतरंग अनुभवों को चुनता है। इसी कारण खंडहर का भाग उसके लिए अभाव के साथ भावात्मक गौरव भी रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने अपने दुख, विरह और टूटे स्वप्नों से भरे जीवन को खंडहर का भाग कहा है; उसके आत्मीय भावों का मूल्य इतना अधिक है कि राजमहलों का वैभव भी उसके सामने तुच्छ है।

त्वरित सुझाव: खंडहर को दुखपूर्ण अंतरंग जीवन और प्रासाद को बाहरी वैभव मानकर दोनों के मूल्य की तुलना करें।

9. आख़िरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
ज़ोर-ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी
हारकर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सौंदर्य बोधपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [4 अंक]

9(क). कविता का शिल्प-सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिल्प-सौंदर्य में भाषा, छंद, बिंब और अलंकार के माध्यम से भाव को प्रभावी बनाने की प्रक्रिया देखी जाती है।
- इस अंश में बोलचाल की भाषा तथा पेंच और चूड़ी से जुड़ा यांत्रिक बिंब कथ्य को मूर्त रूप देते हैं।

चरण 1: भाषा और शैली पहचानिए कवि ने सहज, बोलचाल की खड़ी बोली में अपनी रचना-प्रक्रिया का अनुभव व्यक्त किया है। ज़ोर-ज़बरदस्ती, बेकार घूमने लगी और ठोंक दिया जैसे प्रयोग भाषा को स्वाभाविक तथा सजीव बनाते हैं। कविता मुक्तछंद में है; छोटी-बड़ी पंक्तियों का क्रम विचार के रुकने, उलझने और अंततः थककर ठहर जाने की गति को व्यक्त करता है।

चरण 2: बिंब और अलंकार का प्रभाव समझिए बात की चूड़ी मर गई में बात को पेंच की तरह मानकर रूपकात्मक बिंब रचा गया है। घिसी चूड़ी वाला पेंच घूमता रहता है, पर कसता नहीं; इसी परिचित अनुभव से अर्थहीन भाषा का संकेत मिलता है। उसे कील की तरह में स्पष्ट तुलना होने से उपमा अलंकार है। ठोंकने की क्रिया भाषा पर किए गए बल-प्रयोग को दृश्य रूप देती है।

चरण 3: निष्कर्ष सहज खड़ी बोली, मुक्तछंद, यांत्रिक बिंब और उपमा का प्रयोग इस अंश के शिल्प को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प के उत्तर में चूड़ी और कील के बिंब को उद्धृत करके उनके प्रभाव से जोड़िए।

9(ख). कविता का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य का विवेचन करते समय काव्यांश के केंद्रीय अनुभव तथा उसके संदेश को स्पष्ट किया जाता है।
- इस अंश में अभिव्यक्ति की सहजता खोने और भाषा पर अनावश्यक बल देने की विफलता का अनुभव है।

चरण 1: कवि की विफलता का भाव स्पष्ट कीजिए कवि अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए भाषा के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती करता है। फलतः बात का स्वाभाविक अर्थ और असर नष्ट हो जाता है। बात की चूड़ी मर गई तथा भाषा में बेकार घूमने लगी से स्पष्ट होता है कि शब्द तो रह गए, पर वे अपेक्षित भाव संप्रेषित नहीं कर पाते। यहाँ भाषा की कृत्रिम जटिलता से उपजी असफलता का मार्मिक चित्र है।

चरण 2: अंश के संदेश को समझिए अंत में कवि हारकर बात को कील की तरह उसी स्थान पर ठोंक देता है। यह रचनात्मक संतोष की स्थिति नहीं, विवशता तथा पराजय की अभिव्यक्ति है। काव्यांश का सौंदर्य इस आत्मस्वीकृति में है कि शब्दों पर अत्यधिक आग्रह अर्थ को क्षति पहुँचा सकता है। प्रभावी रचना के लिए सहज भाव और सहज भाषा का सामंजस्य आवश्यक है; केवल शब्दों को घुमाते रहने से अभिव्यक्ति सफल नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश अभिव्यक्ति की विफलता की पीड़ा के माध्यम से सहज भाषा और अर्थपूर्ण संप्रेषण का महत्त्व उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय कवि की हार का भाव और सहज अभिव्यक्ति का संदेश अवश्य जोड़िए।

अथवा

9. नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में लेके हैं पिन्हाती कपड़े [4 अंक]

9(क). कविता के भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फिराक गोरखपुरी की रुबाई में माँ और बच्चे के सहज आत्मीय संबंध का चित्र है।
- भाव-सौंदर्य में दृश्य से प्रकट प्रेम, वात्सल्य और बाल-मनोविज्ञान समझाया जाता है।

चरण 1: माँ के स्नेह का चित्र माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है, उसके उलझे बालों में कंघी करती है और घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहनाती है। ये दैनिक क्रियाएँ केवल देखभाल नहीं हैं; इनमें उसका कोमल स्नेह, तन्मयता और बच्चे को सुंदर तथा सुखी देखने की इच्छा प्रकट होती है।

चरण 2: बच्चे की प्रतिक्रिया समझें कपड़े पहनते समय बच्चा माँ के मुख को बड़े प्यार से देखता है। उसकी दृष्टि में माँ के प्रति विश्वास, अपनापन और निश्चिंतता है। माँ की ममता का उत्तर बच्चा अपनी प्रेमभरी दृष्टि से देता है। इस प्रकार कवि ने किसी असाधारण घटना के बिना घरेलू जीवन में छिपे वात्सल्य और पारस्परिक प्रेम को अत्यंत सजीव बना दिया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ की ममतामयी देखभाल और बच्चे की प्रेमपूर्ण, विश्वासभरी दृष्टि में है; साधारण घरेलू दृश्य माँ-बच्चे के निष्कपट आत्मीय संबंध को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में माँ की देखभाल के साथ बच्चे की प्रेमभरी दृष्टि भी लिखें, तभी पारस्परिक स्नेह स्पष्ट होगा।

9(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश का शब्द या प्रयोग प्रमाण के रूप में देना चाहिए।
- इस रुबाई में सहज मिश्रित भाषा और क्रियाओं से बनी चित्रात्मकता प्रमुख हैं।

चरण 1: सहज हिंदी-उर्दू मिश्रण काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल के निकट और हिंदी-उर्दू के मेल से बनी है। निर्मल तथा जल जैसे शब्दों के साथ गेसुओं और पिन्हाती जैसे प्रयोग सहज रूप से आए हैं। इससे घरेलू जीवन का दृश्य कृत्रिम या कठिन न होकर आत्मीय लगता है। भाषा का यह मेल माँ-बच्चे के संबंध की स्वाभाविक कोमलता को व्यक्त करता है।

चरण 2: चित्रात्मक भाषा नहलाना, उलझे बालों में कंघी करना और घुटनों में लेकर कपड़े पहनाना ऐसी क्रियाएँ हैं जो पूरा दृश्य आँखों के सामने उपस्थित कर देती हैं। छलके-छलके की पुनरुक्ति जल की गति को मूर्त करती है। बच्चा माँ के मुख को प्यार से देखता है, इसलिए दृश्य में क्रिया के साथ भाव भी स्पष्ट उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं: सरल हिंदी-उर्दू मिश्रित बोलचाल और सजीव चित्रात्मकता; गेसुओं जैसे शब्द तथा नहलाने-कपड़े पहनाने की क्रियाएँ इनके प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की प्रत्येक विशेषता के साथ गेसुओं या छलके-छलके जैसा काव्यांश का सटीक उदाहरण दें।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' से कवि क्या कहना चाहता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता आत्म-परिचय में कवि के व्यक्तित्व की संवेदनशीलता और अंतर्विरोधों का चित्रण हुआ है।
- शीतल वाणी बाहरी कोमलता की सूचक है, जबकि आग भीतर के दुख, बेचैनी और तीव्र भावों का प्रतीक है।

चरण 1: शीतल वाणी का आशय समझिए शीतल वाणी से कवि की मधुर, शांत और संयत अभिव्यक्ति का बोध होता है। उसके स्वर में कठोरता या आक्रामकता नहीं है। वह अपने अनुभवों को कोमल भाषा में व्यक्त करता है, जिससे दूसरों को अपनापन और सांत्वना मिल सकती है। इसलिए उसकी वाणी का बाहरी रूप शीतल है; इस शीतलता को भीतर की पीड़ा के अभाव का प्रमाण नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: आग का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट कीजिए आग कवि के अंतर्मन में विद्यमान दुख, विरह-वेदना, बेचैनी तथा प्रबल भावावेग की प्रतीक है। वह जीवन के दुखों को गहराई से महसूस करता है। उसके हृदय में तीव्र अनुभूतियाँ हैं, किंतु वे सीधे कटु वचनों के रूप में नहीं निकलतीं। भीतर जलती हुई वेदना ही उसकी मधुर काव्य-वाणी को संवेदनात्मक गहराई प्रदान करती है।

चरण 3: दोनों स्थितियों का संबंध जोड़िए कवि कहना चाहता है कि उसकी शांत वाणी के पीछे जीवनानुभवों की तपन छिपी है। शीतलता और आग जैसे विपरीत प्रतीकों को एक साथ रखकर उसने अपने व्यक्तित्व की जटिलता दिखाई है। वह अंतर की वेदना को सँजोए हुए भी बाहर मधुरता बाँटता है। इस प्रकार पंक्ति बाह्य संयम और आंतरिक भावों की तीव्रता का विरोधाभासपूर्ण, किंतु स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि की वाणी मधुर और शांत है, किंतु उसके अंतर्मन में दुख, विरह और तीव्र संवेदनाओं की आग जलती रहती है; यही इस पंक्ति का आशय है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति का अर्थ लिखते हुए बाहर की मधुरता और भीतर की वेदना को अलग समझाकर फिर उनका संबंध बताइए।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'उषा' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के बिंबों द्वारा प्रातःकाल के बदलते सौंदर्य का अनुभव करना।
- रंग, प्रकाश और गति के सहारे उषा से सूर्योदय तक का क्रम समझना।

चरण 1: उषाकाल के रंग और घरेलू बिंब शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' का मुख्य विषय प्रातःकालीन प्रकृति का अनुपम, पवित्र और परिवर्तनशील सौंदर्य है। कवि भोर के आकाश की गहरी नीलिमा को नीले शंख और उसकी नमी तथा स्वच्छता को राख से लीपे हुए गीले चौके के बिंब से अनुभव कराता है। ये परिचित बिंब आकाश के सौंदर्य को पाठक के दैनिक जीवन के निकट ले आते हैं। गीले चौके का संकेत सुबह की ताजगी और पवित्रता भी उभारता है। इस चित्रण में ग्रामीण घरेलू परिवेश और व्यापक प्राकृतिक दृश्य का सहज मेल है।

चरण 2: सूर्योदय की ओर बढ़ता दृश्य क्षितिज की लालिमा कभी काली सिल पर लगी लाल केसर जैसी और कभी काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देने जैसी दिखाई देती है। धीरे-धीरे आकाश की नीलिमा में सूर्य की उज्ज्वल आभा उभरती है, जिसे कवि नीले जल में झिलमिलाती गौर देह के बिंब से मूर्त करता है। सूर्य के उदय के साथ भोर के रंगों का जादू टूट जाता है। इस प्रकार कविता किसी स्थिर चित्र का वर्णन नहीं करती; वह प्रकाश के साथ पल-पल बदलते दृश्य और उसके सम्मोहन को शब्दों में रचती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का प्रतिपाद्य उषाकालीन आकाश का रंगमय, निर्मल और गतिशील सौंदर्य है। सहज घरेलू उपमानों के माध्यम से कवि भोर से सूर्योदय तक प्रकृति के बदलते रूप का सजीव अनुभव कराता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल उपमान न गिनाएँ; उन्हें भोर के बदलते रंग और सूर्योदय के क्रम से जोड़ें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' के आधार पर बताइए 'यह अवसर आप खो देंगे' में अवसर किसके लिए है ? इसका भाव भी लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में करुणा के व्यापार और माध्यमों की दिखावटी संवेदना को पहचानना।
- उद्धृत कथन को कार्यक्रम संचालक, अपाहिज व्यक्ति और दर्शकों के संबंध में समझना।

चरण 1: अवसर का संबोधन 'यह अवसर आप खो देंगे' में कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति मुख्यतः कैमरे के सामने बैठे अपाहिज व्यक्ति को संबोधित करता है। उसे यह जताया जाता है कि अपनी पीड़ा बताने तथा स्वयं को दूरदर्शन पर दिखाने का यह दुर्लभ अवसर है। संचालक चाहता है कि वह प्रश्नों के अनुसार अपना दुख व्यक्त करे, भावुक हो और रो पड़े, ताकि कार्यक्रम के लिए प्रभावशाली दृश्य बन सके।

चरण 2: कथन का व्यंग्यार्थ दिखाई देने वाला अवसर पीड़ित की बात कहने का है, किंतु उसका वास्तविक उपयोग कार्यक्रम बनाने वालों की लोकप्रियता के लिए होता है। संचालक व्यक्ति की गरिमा और स्वाभाविक मनःस्थिति की चिंता किए बिना उस पर अपनी पीड़ा प्रदर्शित करने का दबाव डालता है। उसके दुख को दर्शकों की उत्सुकता और करुणा जगाने की सामग्री बनाया जाता है। इस कथन में अवसर खोने का भय दिखाकर भावनाओं का दोहन करने वाली मीडिया-दृष्टि पर तीखा व्यंग्य है। संवेदना का दावा करने वाला कार्यक्रम अंततः पीड़ित को मनुष्य के बजाय प्रदर्शन की वस्तु बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रत्यक्षतः अवसर अपाहिज व्यक्ति के लिए अपनी पीड़ा बताने और दूरदर्शन पर आने का है; व्यंग्य यह है कि इस बहाने संचालक उसके दुख को अपने कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाता है।

त्वरित सुझाव: पहले बताएँ कि संबोधन अपाहिज व्यक्ति से है, फिर उसके पीछे छिपे संचालक के स्वार्थ को स्पष्ट करें।

10(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

राम लक्ष्मण पर अगाध स्नेह रखते हैं, तुलसी के काव्यांश के आधार पर पुष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण की मूर्च्छा पर राम के विलाप से उनके मानवीय स्नेह की पहचान करना।
- पाठ के प्रसंगों से चरित्र-संबंधी कथन को पुष्ट करना।

चरण 1: वियोग की आशंका और पश्चात्ताप लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम व्याकुल होकर विलाप करते हैं। वे स्मरण करते हैं कि लक्ष्मण उनके लिए माता-पिता और घर का सुख छोड़कर वन आए तथा उनके स्नेह के कारण कठिनाइयाँ सहते रहे। अब उनकी पीड़ा देखकर राम स्वयं को असहाय अनुभव करते हैं। वे कहते हैं कि यदि वन में भाई के बिछुड़ने का पूर्वज्ञान होता तो वे पिता की आज्ञा का पालन करके वन आने का निर्णय भी न लेते। यह कथन उनके असाधारण भ्रातृस्नेह और तत्कालीन शोक की तीव्रता बताता है।

चरण 2: भाई की अपूरणीयता का बोध राम के लिए लक्ष्मण का स्थान कोई अन्य संबंध या संपत्ति नहीं ले सकती। वे पत्नी, पुत्र, धन और घर की तुलना में सहोदर भाई की दुर्लभता बताते हैं। लक्ष्मण के बिना वे स्वयं को पंखविहीन पक्षी, मणिविहीन सर्प और सूँड़विहीन हाथी के समान दीन तथा शक्तिहीन मानते हैं। उन्हें यह चिंता भी व्यथित करती है कि अयोध्या जाकर माता सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे। इस प्रकार उनका विलाप केवल रणभूमि की चिंता नहीं, अपने प्रिय भाई को खो देने की असहनीय आशंका है।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण के त्याग का स्मरण, उनके वियोग में अपनी असमर्थता का बोध और माता सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता सिद्ध करते हैं कि राम लक्ष्मण से अगाध स्नेह करते हैं।

त्वरित सुझाव: राम के स्नेह को पुष्ट करने के लिए लक्ष्मण का त्याग, भाई की अपूरणीयता और सुमित्रा की चिंता अवश्य जोड़ें।

11. इन बातों को आज पचास से ज़्यादा वर्ष होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं । कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए क्या करते हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एक मात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम इसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं पानी झमाझम बरसता है पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है बैल प्यासे के प्यासे रह जाते हैं आख़िर कब बदलेगी यह स्थिति ?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

11(क). 'कब बदलेगी यह स्थिति' पूछकर लेखक ने किस बात की ओर संकेत किया है ? आपके विचार से यह कैसे बदल सकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के प्रश्नात्मक कथन में निहित सामाजिक चिंता पहचानना।
- परिवर्तन के उपाय को त्याग, ईमानदारी और आत्मपरीक्षण से जोड़ना।

चरण 1: संकेतित स्थिति लेखक ऐसी सामाजिक स्थिति की ओर संकेत करता है जिसमें देश से माँगें तो बहुत की जाती हैं, पर त्याग और कर्तव्यपालन का अभाव है। लोग दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करते हैं, किंतु अपने आचरण को नहीं जाँचते। फलतः संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध होने पर भी उनके लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचते। फूटी गगरी और प्यासे बैलों का चित्र इसी निष्फलता तथा वंचना की ओर संकेत करता है।

चरण 2: परिवर्तन का उपाय मेरे विचार से यह स्थिति तभी बदल सकती है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर ईमानदारी से काम करे, निजी स्वार्थ सीमित करे और सार्वजनिक हित के लिए त्याग करे। केवल दूसरों को दोष देने के स्थान पर आत्मपरीक्षण करना आवश्यक है। संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण और उनके उपयोग की जवाबदेही सुनिश्चित करके विकास का लाभ वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुँचाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक स्वार्थ, भ्रष्टाचार और जनसाधारण की बनी हुई वंचना पर प्रश्न उठाता है। व्यक्तिगत ईमानदारी, सामूहिक त्याग तथा न्यायपूर्ण व्यवस्था से यह स्थिति बदल सकती है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों हिस्से पूरे करें: पहले स्थिति का संकेत, फिर उसे बदलने के ठोस उपाय लिखें।

11(ख). लेखक को कैसी बातें कचोटती हैं ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की पीड़ा को गद्यांश में व्यक्त विरोधाभास से समझना।
- अनुभूति के कारण को सार्वजनिक हित और निजी स्वार्थ के अंतर से जोड़ना।

चरण 1: कचोटने वाली बातें लेखक को यह बात कचोटती है कि हम देश से हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी माँगें करते हैं, लेकिन देश के लिए त्याग करने को तैयार नहीं होते। निजी स्वार्थ ही हमारा प्रमुख लक्ष्य बन गया है। हम दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा रस लेकर करते हैं, पर यह जाँचने से बचते हैं कि अपने कार्यक्षेत्र में कहीं हम स्वयं भी उसी भ्रष्टाचार के भागीदार तो नहीं हैं।

चरण 2: व्यथा का कारण ये बातें इसलिए पीड़ा देती हैं क्योंकि लेखक के मन में त्याग और सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्य अब भी जीवित है, जबकि वर्तमान व्यवहार उसके विपरीत दिखाई देता है। उपलब्ध संसाधनों के बावजूद जरूरतमंद वंचित रह जाते हैं। कथनी और करनी का यह अंतर तथा आत्मसुधार की उपेक्षा सामूहिक प्रगति को बाधित करते हैं; इसी कारण पुरानी बातें नए संदर्भों में भी लेखक के मन को कचोटती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष देश से माँगने की प्रवृत्ति, त्याग का अभाव, स्वार्थ और दूसरों को दोष देकर अपने भ्रष्ट आचरण से आँख चुराना लेखक को कचोटता है, क्योंकि इससे जनहित और समान विकास बाधित होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल भ्रष्टाचार न लिखें; माँग और त्याग तथा दूसरों की आलोचना और आत्मपरीक्षण के विरोध को भी बताएँ।

11(ग). पानी, गगरी और बैल का प्रतीकार्थ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब के शाब्दिक अर्थ से आगे उसके सामाजिक आशय को पहचानना।
- तीनों प्रतीकों को संसाधन, व्यवस्था और जरूरतमंद जनता के संबंध में समझना।

चरण 1: पानी और गगरी का आशय यहाँ पानी देश में उपलब्ध साधनों, समृद्धि और विकास के लाभों का प्रतीक है। वर्षा की प्रचुरता बताती है कि संसाधनों की उपलब्धता अपने-आप में पर्याप्त नहीं है। गगरी उस व्यवस्था का प्रतीक है जिसके माध्यम से ये साधन एकत्र होकर जरूरतमंदों तक पहुँचने चाहिए। उसका फूटा रहना भ्रष्टाचार, स्वार्थ और वितरण-व्यवस्था की कमियों को व्यक्त करता है; ऐसे दोषों के कारण प्राप्त साधन व्यर्थ बह जाते हैं।

चरण 2: बैल की प्यास का आशय बैल श्रमशील, जरूरतमंद और साधनहीन जनसाधारण का प्रतीक है। उसका प्यासा रह जाना बताता है कि संसाधन होने पर भी वास्तविक जरूरत पूरी नहीं हो पाती। तीनों प्रतीक मिलकर विकास और उसके न्यायपूर्ण वितरण के बीच का अंतर दिखाते हैं। लेखक का आग्रह है कि केवल साधन बढ़ाना पर्याप्त नहीं; व्यवस्था के दोष दूर करके उनका लाभ परिश्रम करने वाली जनता तक पहुँचाना भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष पानी उपलब्ध संसाधनों और विकास के लाभों का, फूटी गगरी दोषपूर्ण एवं भ्रष्ट व्यवस्था का और प्यासे बैल उन जरूरतमंद लोगों का प्रतीक हैं जो लाभों से वंचित रह जाते हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रतीकों को अलग-अलग पहचानने के बाद उनका संबंध लिखें: संसाधन हैं, व्यवस्था दोषपूर्ण है, जनता वंचित है।

अथवा

11. भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों का पता है उनमें कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परम्पराओं को मालूम है लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे सिद्धांत की माँग करता है जो भारतीय परम्पराओं में नहीं मिलता । रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है वह 'दूसरों' पर है और अधिकांशत: परसंताप प्रेरित है । जो करुणा है वह अकसर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है । [6 अंक]

11(क). भारतीय सौंदर्यशास्त्र में प्रयुक्त रसों की क्या विशेषता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश में वर्णित भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की रसदृष्टि पर आधारित होना चाहिए।
- कई रसों का ज्ञान और कुछ रसों का साथ आना अलग किंतु संबंधित बातें हैं।

चरण 1: रसों की विविधता गद्यांश के अनुसार भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों की जानकारी है। मानव जीवन में सुख-दुख और हर्ष-विषाद जैसे अनेक अनुभव आते हैं, इसलिए कला भी विविध भावों की अभिव्यक्ति करती है। किसी कलाकृति को केवल एक ही भाव में सीमित मानना यहाँ की रसदृष्टि का पूरा परिचय नहीं देता।

चरण 2: साथ आने की विशेषता कुछ रसों का एक ही कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर माना गया है। इसका अर्थ है कि अनुकूल रस एक रचना के सौंदर्य को मिलकर समृद्ध कर सकते हैं। किंतु इस सहअस्तित्व को करुणा के हास्य में बदल जाने के समान नहीं समझना चाहिए; लेखक आगे इस रूपांतरण के सिद्धांत का भारतीय परंपरा में अभाव बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय सौंदर्यशास्त्र अनेक रसों को स्वीकार करता है और कुछ रसों का एक ही कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेष्ठ तथा कलात्मक दृष्टि से उपयुक्त मानता है।

त्वरित सुझाव: कई रसों की पहचान और कुछ रसों का एक रचना में साथ आना, ये दोनों बातें उत्तर में रखें।

11(ख). करुणा के संदर्भ में भारतीय परम्परा में क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश करुणा के पात्र और करुणा-हास्य के संबंध, दोनों पर टिप्पणी करता है।
- हर्ष-विषाद का आना-जाना और करुणा का हास्य बनना एक जैसी प्रक्रिया नहीं हैं।

चरण 1: करुणा किसके लिए है लेखक के अनुसार भारतीय परंपरा में करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों के प्रति व्यक्त होती है। उनके दुख और संकट देखकर सहानुभूति उत्पन्न होती है। कभी-कभार दुष्ट व्यक्तियों की दशा भी करुणा का विषय बन जाती है। इसलिए करुणा के पात्र केवल अच्छे व्यक्ति ही हो सकते हैं, ऐसा पूर्ण निषेध गद्यांश नहीं करता।

चरण 2: हास्य से संबंध की सीमा जीवन में हर्ष और विषाद के आने-जाने को भारतीय परंपरा जानती है, किंतु करुणा स्वयं हास्य में बदल जाए, इसके लिए जिस सिद्धांत की आवश्यकता है वह लेखक को भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। यहाँ करुणा और हास्य का उल्लेख है, पर उन्हें अपने ऊपर एक साथ घटने वाली सहज हास्य-करुण अनुभूति के रूप में नहीं देखा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपरा में करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों और कभी-कभी दुष्टों के लिए व्यक्त होती है; लेखक के अनुसार करुणा के हास्य में रूपांतरित होने का सिद्धांत इसमें नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: करुणा के पात्र बताते समय प्रायः सद्व्यक्ति और कभी-कभार दुष्ट, दोनों का उल्लेख करें।

11(ग). रामायण और महाभारत में प्रायः कैसा हास्य मिलता है ? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में पाठ का कथन और उस पर अपनी सहमति, दोनों देना आवश्यक है।
- परसंताप प्रेरित हास्य का अर्थ दूसरों की पीड़ा या विपत्ति को हँसी का आधार बनाना है।

चरण 1: गद्यांश का मत बताएँ लेखक के अनुसार रामायण और महाभारत में हास्य प्रायः दूसरों पर केंद्रित है। वह अधिकांशतः किसी दूसरे की विपत्ति, अपमान, कमजोरी या असहज दशा को देखकर पैदा होता है। इसीलिए उसे परसंताप प्रेरित कहा गया है। यहाँ हँसने वाला स्वयं को हास्य का विषय बनाने के स्थान पर दूसरे की स्थिति से आनंद लेता है।

चरण 2: सहमति की सीमा स्पष्ट करें मैं इस कथन से काफी हद तक सहमत हूँ। किसी की विडंबनापूर्ण दशा पर दूसरों का हँसना ऐसे हास्य की पहचान है। फिर भी प्रायः और अधिकांशतः शब्द ध्यान देने योग्य हैं: लेखक इसे हर हास्य-प्रसंग का अटल नियम नहीं बनाता। अतः दोनों महाकाव्यों के समस्त हास्य को केवल क्रूर उपहास कहना उचित नहीं होगा; कथन को प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार करना अधिक संतुलित है।

चरण 3: निष्कर्ष रामायण और महाभारत में प्रायः दूसरों की पीड़ा या विपत्ति पर आधारित परसंताप प्रेरित हास्य मिलता है। मैं इसे प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार करता हूँ, प्रत्येक हास्य-प्रसंग का अनिवार्य स्वरूप नहीं मानता।

त्वरित सुझाव: प्रायः और अधिकांशतः की सीमा बनाए रखें तथा पाठ के मत के बाद अपनी सहमति स्पष्ट लिखें।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' के पाठ के लेखक का नाम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की पहचान के लिए कहानी के शीर्षक और पाठ के रचनाकार का सही संबंध याद रखना चाहिए।
- फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी के प्रमुख कथाकार हैं; ग्रामीण जीवन और लोकसंस्कृति उनकी रचनाओं की विशेषता है।

चरण 1: पाठ का परिचय 'पहलवान की ढोलक' एक कहानी है। इसमें लुट्टन पहलवान के जीवन के माध्यम से ग्रामीण समाज की परिस्थितियों, बदलते समय और संकट के बीच जीवन के संघर्ष का चित्रण किया गया है।

चरण 2: रचनाकार की पहचान इस कहानी के रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु हैं। उत्तर में उनका पूरा नाम लिखना पर्याप्त है। पात्र लुट्टन पहलवान का नाम लेखक के नाम के स्थान पर नहीं लिखना चाहिए; वह कहानी का नायक है।

चरण 3: निष्कर्ष 'पहलवान की ढोलक' पाठ के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु हैं।

त्वरित सुझाव: पाठ का नाम देखते ही रेणु और लुट्टन का भेद याद रखें: रेणु लेखक हैं, लुट्टन पात्र है।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शिरीष की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष का वृक्ष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सरसता, कोमलता और मस्ती बनाए रखने का प्रतीक है।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष की तुलना अनासक्त अवधूत से की है; अनासक्ति का अर्थ परिस्थितियों के दबाव में अपने स्वभाव को न खोना है।

चरण 1: तुलना का आधार लेखक ने शिरीष की तुलना एक अद्भुत अवधूत से की है। अवधूत सांसारिक सुख-दुःख और आसक्ति से ऊपर उठकर अपने स्वभाव में स्थित रहता है। उसी प्रकार शिरीष भी बाहरी वातावरण की कठोरता से पराजित नहीं होता। वह विपरीत मौसम में भी अपने कोमल फूलों से वातावरण को सुंदर और आनंदमय बनाए रखता है।

चरण 2: प्रतिकूलता में सहज उल्लास भीषण गरमी, लू और उमस में अन्य वनस्पतियाँ मुरझा जाती हैं, पर शिरीष फूलता रहता है। उसके फूल कोमल हैं, फिर भी वृक्ष में कठिन परिस्थितियों को सहने की अद्भुत क्षमता है। बाहर की गरमी और भीतर की सरसता का यह अंतर उसकी विशेषता है। वह जैसे वातावरण से रस खींचकर जीवन में मस्ती और प्रसन्नता भर लेता है।

चरण 3: अवधूत से समानता का आशय शिरीष की यह दशा किसी पलायन या निष्क्रियता की नहीं, बल्कि अनासक्त रहकर जीने की है। वह संकट के बीच भी अपना काम करता है और सौंदर्य बाँटता रहता है। लेखक इसके द्वारा मनुष्य को भी द्वंद्वों से विचलित हुए बिना जीवंत, सहज और उदार बने रहने की प्रेरणा देते हैं। इसलिए तुलना केवल रूप-सौंदर्य पर नहीं, स्वभाव और जीवन-दृष्टि पर आधारित है।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष की तुलना अनासक्त अवधूत से की गई है, क्योंकि वह भीषण गरमी और लू में भी निर्लिप्त भाव से खिलता हुआ अपनी सरसता, मस्ती और कोमलता बनाए रखता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'अवधूत' लिखें, फिर गरमी में खिलने और अनासक्त मस्ती के आधार पर तुलना स्पष्ट करें।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली चैप्लिन की कला साधारण मनुष्य के जीवन, संघर्ष और मानवीय दुर्बलताओं से जुड़ी है।
- उनके व्यक्तित्व में हास्य, करुणा, आत्मीयता और अपने ऊपर हँस सकने का साहस एक साथ दिखाई देता है।

चरण 1: साधारण मनुष्य से आत्मीयता चार्ली चैप्लिन का व्यक्तित्व अत्यंत मानवीय और संवेदनशील है। उनकी कला में गरीबी, अभाव और उपेक्षा झेलने वाले साधारण व्यक्ति का अनुभव बोलता है। वे पर्दे पर किसी अपराजेय नायक के रूप में नहीं आते; उनकी असफलताएँ और उलझनें हमें अपने जीवन की याद दिलाती हैं। इसी कारण दर्शक उनके पात्र से सहज आत्मीयता अनुभव करता है।

चरण 2: हास्य के भीतर करुणा चार्ली की प्रमुख विशेषता यह है कि वे दुखद स्थिति में भी हँसी उत्पन्न कर देते हैं। उनकी हरकतें हमें हँसाती हैं, लेकिन उनके पीछे छिपी विवशता मन में करुणा भी जगाती है। यह हास्य किसी कमजोर मनुष्य को नीचा दिखाने वाला नहीं है; उसमें मनुष्य की कमियों की पहचान और उसके प्रति सहानुभूति साथ-साथ है। वे स्वयं को भी हास्य का विषय बनाने से नहीं हिचकते।

चरण 3: जिजीविषा और व्यापक आकर्षण कठिनाइयों के बावजूद उनका पात्र फिर उठ खड़ा होता है और जीवन से संबंध नहीं तोड़ता। उनकी देहभाषा और अभिनय की सादगी उन्हें अलग-अलग देशों और भाषाओं के दर्शकों के निकट ले जाती है। इस प्रकार सहजता, जीवट, विनोदप्रियता और मानवीय समानता में विश्वास उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाते हैं। वे दर्शक को अपने पर हँसने और दूसरों का दुख समझने की दृष्टि देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष चार्ली चैप्लिन संवेदनशील, सरल, विनोदप्रिय और संघर्षशील कलाकार थे। अपने ऊपर हँसने की क्षमता तथा हास्य में करुणा का समावेश उन्हें साधारण मनुष्य का आत्मीय प्रतिनिधि बनाता है।

त्वरित सुझाव: चार्ली की विशेषताएँ लिखते समय हर गुण को उनकी कला से जोड़ें: साधारण पात्र, आत्महास्य और करुणा इसके मुख्य आधार हैं।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भारत की जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन क्यों नहीं कह सकते ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. अम्बेडकर श्रम के स्वाभाविक विभाजन और जन्म पर आधारित श्रमिकों के विभाजन में अंतर करते हैं।
- उपयोगी श्रम-विभाजन व्यक्ति की योग्यता, रुचि और स्वतंत्र चुनाव पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: श्रम के स्थान पर श्रमिकों का विभाजन डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जाति-प्रथा केवल कामों को अलग-अलग वर्गों में नहीं बाँटती, बल्कि काम करने वाले मनुष्यों को भी जन्म के आधार पर स्थायी श्रेणियों में बाँट देती है। ये श्रेणियाँ ऊँच-नीच की भावना से जुड़ी होती हैं। सामान्य श्रम-विभाजन में कार्यों की भिन्नता से मनुष्यों का सामाजिक सम्मान कम या अधिक नहीं होना चाहिए, जबकि जाति-व्यवस्था कुछ कामों और उन्हें करने वालों को हीन मानती है। इसलिए वह श्रम-विभाजन से अधिक श्रमिकों का भेदभावपूर्ण विभाजन है।

चरण 2: योग्यता और स्वतंत्रता का अभाव जाति-प्रथा में व्यवसाय का निर्धारण व्यक्ति की रुचि, प्रशिक्षण और क्षमता देखकर नहीं, उसके माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर किया जाता है। व्यक्ति को अपनी पसंद का काम चुनने और परिस्थितियों के अनुसार व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। उद्योगों और आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर भी पैतृक पेशे से बँधे रहना पड़ता है; इससे बेरोजगारी बढ़ सकती है। अरुचिकर काम को बाध्य होकर करने से कार्यकुशलता भी घटती है। इस प्रकार यह व्यवस्था स्वाभाविक और उपयोगी श्रम-विभाजन की आवश्यक शर्तें पूरी नहीं करती।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा जन्म पर आधारित, ऊँच-नीच से युक्त और व्यवसाय की स्वतंत्रता रोकने वाला श्रमिक-विभाजन है; इसलिए उसे उचित श्रम-विभाजन नहीं कहा जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जन्म, ऊँच-नीच और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता—इन तीन आधारों पर अंतर स्पष्ट करें।

13. 'जूझ' कहानी के नायक के उन जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए जिससे 'जूझ' शीर्षक की उपयुक्तता सिद्ध होती है । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना में शिक्षा पाने और व्यक्तित्व विकसित करने का संघर्ष केंद्रीय है।
- शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करने के लिए नायक के पारिवारिक, शैक्षिक और रचनात्मक संघर्षों को घटनाओं से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: पारिवारिक परिस्थितियों से संघर्ष 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से लगातार लड़ना। कहानी का नायक आनंद पढ़ना चाहता है, लेकिन उसके पिता उसे खेती के काम में लगाए रखते हैं। पढ़ाई छोड़कर खेत में काम करने की बाध्यता उसके भविष्य के सपने को रोकती है। वह इस स्थिति को चुपचाप स्वीकार नहीं करता। अपनी माँ के साथ दत्ता जी राव के पास जाकर सहायता माँगता है। उनके हस्तक्षेप से पिता उसे विद्यालय जाने की अनुमति देते हैं, पर खेत के काम की शर्तें भी लगा देते हैं। इस तरह शिक्षा का अवसर पाने के लिए ही उसे घर के भीतर लंबा संघर्ष करना पड़ता है।

चरण 2: श्रम और विद्यालय के बीच संतुलन विद्यालय जाने की अनुमति मिलना उसके संघर्ष का अंत नहीं है। उसे खेतों का काम पूरा करके पढ़ने जाना पड़ता है। श्रम से होने वाली थकान, समय की कमी और पढ़ाई में आए अंतराल के बावजूद वह अपनी पढ़ाई जारी रखता है। विद्यालय में सहपाठियों की हँसी और अपने पिछड़ेपन से पैदा हुई झिझक का भी सामना करता है। वह परिश्रम और लगन से अपनी स्थिति सुधारता है। पढ़ने की इच्छा उसे कठिन दिनचर्या से हारने नहीं देती। उसकी सफलता किसी सहज सुविधा का परिणाम नहीं, बल्कि निरंतर प्रयत्न का फल है।

चरण 3: रचनात्मक व्यक्तित्व का विकास सौंदलगेकर मास्टर के कविता पढ़ाने के ढंग से उसके भीतर कविता के प्रति आकर्षण पैदा होता है। वह कविताएँ याद करता है और स्वयं भी कविता रचने का प्रयास करता है। खेतों में काम करते हुए प्रकृति, लय और शब्दों से उसका संबंध गहरा होता है। जिस श्रम और अकेलेपन को वह पहले केवल बाधा समझता था, उसी के बीच वह रचना के अवसर खोजता है। शिक्षा की ललक और काव्य-संवेदना मिलकर उसके व्यक्तित्व को नई दिशा देती हैं। इस प्रकार वह बाहरी बाधाओं के साथ अपने संकोच और सीमाओं से भी जूझता है।

चरण 4: निष्कर्ष नायक प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों, श्रम की विवशता और शैक्षिक कठिनाइयों से जूझकर पढ़ाई तथा कविता-सृजन की राह बनाता है। उसका पूरा जीवन-प्रयत्न संघर्ष की कथा है, इसलिए 'जूझ' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के अर्थ से आरंभ करें और पिता का विरोध, श्रम के साथ पढ़ाई तथा कविता-साधना के प्रसंग जोड़ें।

अथवा

13. ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति का कैसा चित्रण किया है उस स्थिति में आज क्या परिवर्तन दिखाई पड़ता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक स्त्री के श्रम, मातृत्व और सामाजिक योगदान के सम्मान का प्रश्न उठाती हैं।
- उत्तर में डायरी में व्यक्त दृष्टि और आज की स्थिति के संतुलित मूल्यांकन को अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: तत्कालीन समाज में असमानता ऐन फ्रैंक के अनुसार समाज में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर प्रतिष्ठा नहीं मिलती थी। शारीरिक शक्ति और कमाई में पुरुष के प्रभाव के कारण उसे परिवार में अधिक अधिकार मिलता था। स्त्रियों का काम घर सँभालना, बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण करना मान लिया जाता था। इन दायित्वों को सामान्य कर्तव्य समझकर उनके महत्व की उपेक्षा की जाती थी। ऐन इस दृष्टि को अन्यायपूर्ण मानती हैं। उनके विचार में स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कम महत्व देना उसके वास्तविक योगदान को नकारना है।

चरण 2: स्त्री के योगदान और सम्मान की माँग ऐन विशेष रूप से मातृत्व की कठिनाइयों और प्रसव की पीड़ा की ओर ध्यान दिलाती हैं। मनुष्य की निरंतरता और बच्चों के पालन-पोषण में स्त्री का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, फिर भी समाज उसके त्याग और सहनशक्ति

को अपेक्षित सम्मान नहीं देता। वे स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में हीन समझने के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। वे चाहती हैं कि स्त्री की क्षमता, स्वतंत्रता और गरिमा को स्वीकार किया जाए। उनका आग्रह केवल सहानुभूति का नहीं, बल्कि बराबरी और न्यायपूर्ण सामाजिक दृष्टि का है।

चरण 3: वर्तमान स्थिति में परिवर्तन और शेष समस्याएँ आज स्त्रियों की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी पहले की अपेक्षा बढ़ी है। वे प्रशासन, विज्ञान, चिकित्सा, व्यवसाय, खेल और राजनीति जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। परिवार और समाज के निर्णयों में उनकी आवाज को अधिक महत्व मिलने लगा है। समान अवसर तथा अधिकारों के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। फिर भी यह परिवर्तन हर वर्ग और स्थान तक समान रूप से नहीं पहुँचा है। घरेलू काम का असमान बोझ, स्त्री-पुरुष भेदभाव, हिंसा और अवसरों की कमी जैसी समस्याएँ अब भी बनी हुई हैं। इसलिए ऐन की सम्मान और समानता की माँग आज भी प्रासंगिक है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन ने स्त्री के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद उसके प्रति उपेक्षा और असमानता का चित्रण किया है। आज स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है, पर पूर्ण समानता और गरिमा सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक व्यवहार में और परिवर्तन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: पहले ऐन की दृष्टि में स्त्री की दशा बताएँ, फिर आज की उपलब्धियों और बची हुई असमानताओं की तुलना करें।

14(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का पाठ पुरातात्त्विक अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता के नगर जीवन और सांस्कृतिक दृष्टि का परिचय देता है।
- नगर योजना, स्वच्छता, कला और सामान्य नागरिक के जीवन से जुड़ी सुविधाएँ इस सभ्यता की विशेषताओं को समझने का आधार हैं।

चरण 1: सुनियोजित नगर और स्वच्छता की व्यवस्था मोहनजोदड़ो के अवशेष बताते हैं कि सिंधु सभ्यता का नगर जीवन सुव्यवस्थित था। सड़कें और गलियाँ योजनाबद्ध थीं तथा पकी ईंटों से मकान बनाए जाते थे। घरों में स्नान की व्यवस्था, कुएँ और पानी की निकासी के लिए नालियाँ थीं। विशाल सामूहिक स्नानागार सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता के महत्त्व का प्रमाण है। ऐसी सुविधाएँ बताती हैं कि नगर बनाते समय लोगों की दैनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता था।

चरण 2: कला, उपयोगिता और नागरिक संस्कृति मुहरें, मूर्तियाँ, मृद्भांड और आभूषण यहाँ के लोगों की कलात्मक रुचि तथा शिल्पकौशल के प्रमाण हैं। वस्तुओं में उपयोगिता के साथ सौंदर्य का मेल दिखाई देता है। विकसित खेती, सुव्यवस्थित व्यापार और विभिन्न शिल्पों ने समृद्ध नागरिक जीवन को आधार दिया था। लेखक को यहाँ भव्य राजमहलों, विशाल मंदिरों या राजसत्ता के आतंक का प्रदर्शन प्रमुख रूप से दिखाई नहीं देता। इसके विपरीत नगर व्यवस्था में सामान्य लोगों की सुविधा उभरती है। इसी आधार पर पाठ सिंधु सभ्यता की सुघड़ता, कलाप्रियता और नागरिक चेतना को रेखांकित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ सुव्यवस्थित नगर योजना, स्वच्छता, जल व्यवस्था, विकसित शिल्पकला और सामान्य नागरिक के जीवन को महत्त्व देने वाली संस्कृति थीं। मोहनजोदड़ो के अवशेष इन विशेषताओं के ठोस प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर योजना, नालियाँ और स्नानागार जैसे अवशेषों को कला तथा नागरिक सुविधाओं से जोड़ें; केवल विशेषणों की सूची न लिखें।

14(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल, ऐसा क्यों ? स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में बदलते सामाजिक मूल्यों और पीढ़ियों के अंतर से उत्पन्न पारिवारिक तनाव प्रस्तुत हुआ है।
- यशोधर बाबू तथा उनकी पत्नी का नए समय के प्रति अलग व्यवहार उनके अनुभवों, मान्यताओं और बच्चों से संबंध के आधार पर समझना चाहिए।

चरण 1: पत्नी की व्यावहारिकता और बच्चों से जुड़ाव यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ इसलिए ढल जाती हैं कि वे बच्चों के बदलते रहन-सहन और उनकी इच्छाओं को सहजता से स्वीकार करती हैं। पहले परिवार की जिम्मेदारियों और अभावों में उनका जीवन बीता था। अब बच्चों के बड़े होने और आर्थिक स्थिति सुधरने पर वे उपलब्ध सुविधाओं तथा सुखों का आनंद लेना चाहती हैं। बच्चों के आग्रह पर आधुनिक पहनावे और तौर-तरीकों को अपनाने में उन्हें अपनी पहचान के मिटने का भय नहीं होता। वे परिवार में घुल-मिलकर चलने को अधिक महत्त्व देती हैं। इसलिए बच्चे भी उन्हें अपने उत्साह में शामिल कर लेते हैं।

चरण 2: यशोधर बाबू का पुराने आदर्शों से आग्रह यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशनदा और पुराने पहाड़ी परिवेश का गहरा प्रभाव है। सादगी, संयम तथा परंपरागत व्यवहार उनके लिए जीवन की कसौटी हैं। वे नई पीढ़ी के उपभोग और प्रदर्शन को उसी कसौटी पर परखते हैं। बेटे का अधिक वेतन, घर की आधुनिक सुविधाएँ और विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव उन्हें सहज नहीं लगते। बच्चों के स्नेह में भी वे नई जीवनशैली का दबाव अनुभव करते हैं। उनके मन में परिवार से जुड़ने की इच्छा तो है, पर पुरानी मान्यताओं और वर्तमान परिस्थितियों के बीच सामंजस्य नहीं बन पाता। इसी आंतरिक द्वंद्व के कारण वे पत्नी की तरह आसानी से बदल नहीं पाते।

चरण 3: निष्कर्ष पत्नी की व्यावहारिकता, बच्चों से आत्मीय भागीदारी और नए सुखों की स्वीकृति उन्हें बदलते समय के अनुकूल बना देती है। यशोधर बाबू पुराने आदर्शों से भावनात्मक रूप से बँधे होने के कारण नए व्यवहार को स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना में पत्नी की बच्चों से भागीदारी और यशोधर बाबू पर किशनदा के प्रभाव को साथ रखें; समस्या को केवल आयु का अंतर न बताएँ।

14(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा ? उसने उनका समाधान किस प्रकार किया ? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' प्रतिकूल परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त करने के संघर्ष को सामने लाता है। विद्यालय में प्रवेश पा लेना लेखक की कठिनाइयों का अंत नहीं था।
- इस प्रश्न में विद्यालय की समस्याओं के साथ उनके समाधान भी बताने हैं। लेखक का धैर्य, परिश्रम, सहपाठी का सहयोग और अध्यापक का प्रोत्साहन उत्तर के मुख्य आधार हैं।

चरण 1: पहनावे और नए वातावरण की परेशानी लंबे अंतराल के बाद पाठशाला पहुँचने पर लेखक को नए वातावरण में संकोच हुआ। वह गाँव का पुराना पहनावा, धोती और गमछा, पहनकर आया था। उसकी कक्षा के लड़के अलग तरह के कपड़े पहनते थे, इसलिए उसका पहनावा उपहास का कारण बना। चह्वाण नाम का लड़का उसकी खिल्ली उड़ाता और उसे परेशान करता था। इस व्यवहार से लेखक आहत हुआ, किंतु उसने पढ़ाई छोड़कर लौट जाने के बजाय इस स्थिति को सहने और उससे निकलने का निश्चय किया। नए कपड़े मिलने पर पहनावे से उपजा संकोच भी कम हुआ।

चरण 2: पढ़ाई और साथियों से तालमेल पढ़ाई बीच में छूट जाने के कारण लेखक को पुनः अध्ययन की लय पकड़नी थी। उसने कक्षा के परिश्रमी और होशियार छात्र वसंत पाटील को आदर्श बनाया। वसंत शांत रहकर मन लगाकर पढ़ता और प्रश्न हल करता था। लेखक

उसके पास बैठकर उसी तरह एकाग्रता से काम करने लगा। अभ्यास से उसकी समझ बढ़ी और वह गणित के सवाल हल करने लगा। वसंत से उसकी मित्रता हुई और अध्यापक भी उसकी योग्यता पहचानने लगे। इससे उपेक्षा और अकेलेपन की जगह आत्मविश्वास तथा सम्मान मिलने लगा।

चरण 3: अध्यापक के प्रोत्साहन से आगे बढ़ना न. वा. सौंदलगेकर मास्टर की कविता पढ़ाने की प्रभावशाली शैली ने लेखक में भाषा और कविता के प्रति रुचि जगाई। वह कविता के सुर, लय और भाव पर ध्यान देने लगा तथा स्वयं भी कविता बनाने का प्रयास करने लगा। मास्टर के मार्गदर्शन और अपनी लगातार मेहनत से उसने विद्यालय को भय तथा अपमान की जगह सीखने और अपनी क्षमता विकसित करने का स्थान बना लिया।

चरण 4: निष्कर्ष पाठशाला में लेखक को पहनावे पर उपहास, साथियों की शरारत, संकोच और पढ़ाई में फिर से गति पाने की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसने धैर्य, नियमित अभ्यास, वसंत पाटील के सहयोग और अध्यापक के प्रोत्साहन से इनका समाधान किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक कठिनाई के साथ उसका समाधान जोड़ें; वसंत पाटील और सौंदलगेकर मास्टर की भूमिका अलग-अलग स्पष्ट करें।

14(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ऐन फ्रैंक की डायरी के आधार पर किशोर वर्ग की मानसिक स्थिति पर अपने विचार लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी किशोर मन की संवेदनशीलता, आत्मचेतना, स्वतंत्रता की आकांक्षा और स्नेह की आवश्यकता को व्यक्त करती है। युद्ध तथा छिपकर रहने की विवशता इन भावों को और तीव्र बनाती है।
- किशोर वर्ग की मानसिक स्थिति पर विचार करते समय ऐन के व्यक्तिगत अनुभवों को आधार बनाना चाहिए। उसके अनुभवों से व्यापक प्रवृत्तियाँ समझी जा सकती हैं, पर प्रत्येक किशोर को एक जैसा मानना उचित नहीं है।

चरण 1: समझे जाने की इच्छा और अकेलापन ऐन परिवार के लोगों के बीच रहते हुए भी अपनी भावनाएँ खुलकर कहने के लिए एक आत्मीय साथी की कमी अनुभव करती है। वह डायरी को 'किट्टी' नाम देकर उससे मन की बातें करती है। इससे पता चलता है कि किशोर को केवल लोगों का साथ नहीं, ऐसा विश्वासपात्र चाहिए जो उसकी भावनाओं को बिना उपहास और डाँट के सुने। वह अपने व्यक्तित्व को पहचानने लगता है और चाहता है कि बड़े भी उसे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में समझें। बार-बार आलोचना या गलत समझे जाने से उसके भीतर अकेलापन और क्षोभ बढ़ सकता है।

चरण 2: बदलती भावनाएँ और स्वतंत्रता की आकांक्षा डायरी में ऐन का आत्मनिरीक्षण, परिवार से मतभेद और पीटर के प्रति आकर्षण किशोरावस्था की भावनात्मक जटिलता दिखाते हैं। इस उम्र में स्नेह, मित्रता और निकटता की इच्छा प्रबल होती है; साथ ही मन में संकोच, संशय और विरोध भी आते हैं। ऐन अपने अनुभवों पर सोचती है और स्वयं को समझने की कोशिश करती है। इसलिए किशोर की असहमति को केवल उद्दंडता मानने के बजाय उसके बदलते मन और अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता को समझना चाहिए।

चरण 3: भय के बीच आशा और परिपक्वता युद्ध और यहूदियों पर अत्याचार के कारण छिपकर रहने की विवशता ऐन के सामान्य किशोर जीवन को बाधित करती है। बाहर जाने, खुली हवा में रहने और प्रकृति को देखने जैसी साधारण इच्छाएँ भी उसके लिए अत्यंत मूल्यवान बन जाती हैं। मृत्यु और पकड़े जाने का भय उसे असुरक्षित करता है, फिर भी वह भविष्य, लेखन और बेहतर जीवन के सपने सँजोती है। मेरे विचार से उसकी डायरी बताती है कि किशोर केवल चंचल या भावुक नहीं होते; वे कठिन परिस्थितियों पर गंभीरता से विचार कर सकते हैं। उन्हें विश्वास, संवाद, संवेदनशील मार्गदर्शन और आशा बनाए रखने के अवसर मिलने चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन की डायरी में किशोर मन का अकेलापन, अपनत्व की खोज, स्वतंत्रता की चाह, आकर्षण और भविष्य के सपने एक साथ दिखाई देते हैं। उसकी मानसिक स्थिति को समझने का सही मार्ग सहानुभूति और संवाद है; युद्धजनित भय के बीच उसकी आशा और आत्मचिंतन उसकी संवेदनशील परिपक्वता भी प्रकट करते हैं।

त्वरित सुझाव: हर मानसिक विशेषता को डायरी के किसी अनुभव से जोड़ें, जैसे किट्टी से संवाद, पीटर से निकटता या बंद जीवन में स्वतंत्रता की चाह।